चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र

Photo by D. Kasbekar

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

भीड़ यहाँ

प्रेषक :
रामचन्द्र सिन्धी, किशनगढ़

चन्दामामा

मार्च १९५९

विषय-सूची

बहादुर मुन्नू और गप्पी चुन्नू
तुम डरते हो तो जाओ, मैं तो तमाशा देखूंगा!
हैं! यह तुम जैसे बच्चों के लिये है! हमसे बहादुरों के लिये नहीं!
मज़ा आ गया तमाशे का!
हैं! ऐसे कई तमाशे खुद किये हैं मैंने!
कई बार जंगलों में जाकर मैं बीन बजाता...
तो सांप मस्त हो कर भागे आते...
उन की माला पहन कर निकल-ता तो लोग प्रणाम करते!

मुझे पता न था तुम ऐसे बहादुर हो!
कभी दिखाऊंगा तुम्हें सांप पकड़ के अब चलता हूँ रात हो रही है!
सांप सांप! बचाओ, बचाओ!
उफ़ जान निकल गई! पर वीन होती तो आज तुम्हें सांप पकड़ के दिखा देता।
दो क़दम भागे तो जान निकल गई। और मुझे याद सांप नहीं भेरी फेंकी थी!
कुछ खतरे से भागने के लिए भी ताक़त की ज़रूरत है। इस लिए तुम्हें हर रोज़ दूध पीना और 'डालडा' में पका खाना खाना चाहिये।
खाने बड़े स्वादिष्ट होते हैं। अपनी माता जी से कहिये कि वे आपका खाना सदा 'डालडा' में बनायें।
डालडा
हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई
DL. 4788-30 HI

आधुनिक यन्त्र
और कुशल
कार्य-कर्ताओं से
सुसज्जित,
सुव्यवस्थित
बृहत संस्था
PRASAD
PROCESS
आफसेट प्रिन्टर्स

बच्चों के खेल के लिए...

....यही स्थान खेल का मैदान है। समझदार माता-पिता अपने बच्चों में खेल के मैदान का उपयोग करने की अच्छी आदत डालते हैं, न कि सड़कों पर खेलने की।

बच्चों के विकास के लिए दूसरी अच्छी आदत है खाने की।

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

सभी देशों में, पत्र पत्रिकाओं को डाक विभाग की तरफ़ से कुछ विशेष रियायतें दी जाती हैं—ये रियायतें भारत सरकार द्वारा भी दी गई हैं।

पर यह जरूरी है कि इन सुविधाओं का अधिकारी होने के लिए पत्र-पत्रिकायें अपना ढांचा बदलें।—इस सम्बन्ध में कुछ नियम हैं।

इन नियमों के अनुसार हमें "चन्दा मामा" की सामग्री में भी कुछ परिवर्तन करना पड़ रहा है।

हम आशा करते हैं कि इन परिवर्तनों के कारण "चन्दामामा" पहले से अधिक शिक्षाप्रद हो सकेगा और पाठकों का प्रोत्साहन हमें सदा मिलता रहेगा।

वर्ष : १० मार्च १९५९ अंक : ७

मुख - चित्र

कृष्ण ने हस्तिनापुर से वापिस आकर उपप्लाव्य पहुँचकर, पाण्डवों की सभा में अपने कार्य की असफलता के बारे में कहा—"कौरव अपनी ग्यारह अक्षौहिणी सेना को लेकर कुरुक्षेत्र पहुँच गये हैं। उन्होंने भीष्म को सेनापति बनाया है। इसलिए आपको क्या करना होगा इस बारे में भी निश्चय कर लो।"

युधिष्ठिर ने सभा में कहा—"हमारे पास सात अक्षौहिणी सेना है। मैं यह कहना चाहूँगा कि उन सातों के सात योद्धा—विराट, द्रुपद, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, सात्यकी, चेकितानु, भीम सेनापति हों, इन सबसे ऊपर सेनापति कौन हो हमें यह सोचना है।"

अर्जुन ने कहा कि अच्छा होगा कि धृष्टद्युम्न को यह पद दिया जाय, क्योंकि अस्त्र विद्या में, युद्ध विद्या में, वह भीष्म से हर तरह से मुकाबला कर सकता है।

कृष्ण ने अर्जुन का समर्थन किया। और राजाओं ने इस निश्चय पर हर्ष प्रकट किया।

तुरत युद्ध की तैयारियाँ प्रारम्भ हो गईं। सैनिकों ने अस्त्र ले लिए। पाण्डव भी कुरुक्षेत्र की ओर कूच करने लगे। सेना के सामने भीम, नकुल, सहदेव, अभिमन्यु, उपपाण्डव धृष्टद्युम्न आदि थे। सेना के बीच में युधिष्ठिर था।

कुरुक्षेत्र पहुँचते ही शिविर के लिए अच्छी जगह ढूँढी गई। हिरण्वती के किनारे, साफ समतल प्रदेश में शिविर बनाने का निश्चय किया गया। कृष्ण ने शिविर के चारों ओर खाई खुदवाई और वहाँ सैनिकों को पहरे पर रखा। राजाओं के लिए एक ही प्रकार के तम्बू गाड़े गये। सैनिक, चिकित्सक, नौकर, सब अपने अपने काम में लग गये। सैनिकों के लिए आवश्यक कवच, अस्त्र, आहार सामग्री के पहाड़ से ढेर लगा दिये गये। युधिष्ठिर ने हर तम्बू में जाकर, व्यवस्था का स्वयं निरीक्षण किया।

चोर का सहायक कोतवाल

कैरो नगर में मुयीन अल्दीन नाम का एक डाकू रहा करता था। कैरो के सुल्तान ने उसे बहुत पकड़ने की सोची पर वह सफल न हुआ। उसने आखिर उसको कोतवाल नियुक्त किया। नगर के चोर उसके दबदबे में थे।

एक दिन मुयीन, बली के घर के आँगन में पड़ा सो रहा था कि उस पर एक भारी-सा गट्ठर गिरा। मुयीन ने उठकर चारों ओर देखा, पर वहाँ कोई न दिखाई दिया। जो गट्ठर उस पर गिरा था, उसमें हजार सोने की दीनारें थीं। "मुझ पर किसे इतना प्रेम हुआ है!" सोचते हुए उसने उन दीनारों को रख लिया।

अगले दिन जब वह फिर उसी जगह सो रहा था, तो फिर उस पर एक और गट्ठर गिरा। उसमें भी हजार दीनारें थीं। उसके गिरानेवाले का भी कहीं पता न चला। तीसरे दिन वह सोया तो नहीं, पर उसने ऐसा दिखाया, जैसे सो रहा हो। थोड़ी देर में ऐसा लगा जैसे कोई उसकी जेब टटोल रहा हो, उसने आँखें खोलीं, और किसी का हाथ पकड़ लिया। मगर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह हाथ एक स्त्री का था।

"बात न करो, मेरे साथ आओ" उसने इशारा किया। मुयीन उसके साथ चला। जब दोनों एक निर्जन गली में गये तो मुयीन ने उससे पूछा—"मुझसे तुम्हें क्या काम है! अगर तुम मुझसे शादी करना चाहो तो मैं करने के लिए तैयार हूँ।"

"क्या मुझे तुमसे अच्छा पति नहीं मिलेगा, यह समझ रहे हो! मेरी थोड़ी

त्रिपाठी

सी मदद करो। काजी की लड़की और मैं बचपन से सहेली हैं। मेरी सहेली एक से प्रेम करती है। यह देखकर कि मैं उसकी ओर से बातचीत चला रही हूँ, वह मुझे अपने घर नहीं आने दे रहा है। अगर मेरी मदद न मिली, तो काजी, मेरी सहेली की किसी और से शादी करके उसकी जिन्दगी बर्बाद कर देगा। इसलिए तुम काजी के घर पहुँचने में मेरी मदद करो।" उसने कहा।

"मैं इसके लिए क्या कर सकता हूँ!" कोतवाल मुयीन ने पूछा।

"जरा ध्यान से सुनो। आज आधी रात को मैं काजी के घर के पास अकेली बैठी रहूँगी। तुम वहाँ गश्त लगाते आओ और मुझ से पूछ तलब करो। मैं यह कहूँगी कि मैं शहर काम पर आई थी और शहर के फाटक बन्द हो जाने के कारण वापिस न जा सकी। तुम काजी के घर के किवाड़ खटखटाओ और उनसे यह सिफारिश करो कि वे मुझे सवेरे तक अपने घर रख लें।" उसने कहा।

क्योंकि मुयीन ने पहिले ही उससे दो हजार दीनारें ली थीं, इसलिए उसकी मदद करके उसने पुण्य भी पाना चाहा।

उस दिन रात को सुरक्षा के सैनिकों को लेकर गश्त लगाता आधी रात के समय निश्चय के अनुसार, वह काजी के घर के पास आया। एक पेड़ के नीचे काली-सी कोई चीज़ बैठी दिखाई दी।

"कौन हो तुम?" मुयीन ने उससे पूछा। वह तुरत खड़ी होगई। सैनिकों ने पहिचान लिया कि वह स्त्री थी, और कीमती पोषाक पहिने हुई थी।

"हुजूर! मैं गहने वगैरह खरीदने के लिए शाम को शहर आई। खरीदने के

बाद में अपनी सहेलियों से मिलने के लिए इधर उधर घूमी। बदकिस्मती से एक भी घर में न थी। मेरे घर वापिस जाने से पहिले ही शहर का फाटक बन्द कर दिया गया—अब रात काटने के लिए भी कहीं कोई जगह नसीब में नहीं दीख पड़ती।" उसने कहा।

कोतवाल मुयीन ने अपने सैनिकों से कहा—"यह कोई अच्छे खानदान की स्त्री मालूम होती है। अगर रात को डाकुओं ने लूटा तो हम पर बात आयेगी। काजी का घर पास ही है। जाकर उनसे पूछें कि वे इसे रात के लिए जगह दे सकेंगे!" उसने कहा। उसने काजी को उठाकर उस युवती के बारे में कहा। "मुझे कोई एतराज़ नहीं है। आज रात को वह मेरी लड़की के कमरे में सोकर सवेरे उठकर जा सकती है।" काजी ने कहा।

यह काम समाप्त करके, मुयीन खुशी खुशी, गश्त खतम करके घर जाकर सो गया। अगले दिन सवेरे उठते ही उसे वह स्त्री याद आई। मानों किसी काम पर जा रहा हो—वह उस तरफ़ गया उसने झाँककर काजी के घर के अन्दर देखा।

मुयीन को देखते ही काजी उसे धमकाने लगा—"तुमने क्या वाहियात काम किया? रात किसी चोर लड़की को मेरे घर छोड़ गये। सवेरे वह छः हज़ार दीनारें चुराकर चलती हुई। तुम्हारा चोरों का पकड़ना तो अलग तुम चोरों की मदद कर रहे हो!" मुयीन के पैर कांपे। उसे वह स्त्री चोरी करने में चतुर मालूम हुई।

"हुजूर! माफ़ कीजिये। मैंने उस स्त्री का विश्वास कर लिया। सन्देह करने के लिए मेरे पास कोई कारण न था।

चोर और माल लाकर देने का काम मेरा रहा।" मुयीन ने कहा।

"चोरों का पकड़ने का काम तेरा ही तो है, मेरा थोड़ा ही है। अगर तुमने इस चोर को तीन दिन में पकड़कर न दिया तो मैं स्वयं तुम्हें मौत की सजा दूँगा।" काजी ने कहा।

मुयीन पसीना पसीना हो गया। फैरो नगर की बुरका पहिननेवाली हज़ारों स्त्रियों में से, किस बुरके में वह स्त्री छुपी थी, वह कैसे मालूम करे! उसके लिए तो यह असम्भव था ही। किसी भी मनुष्य के लिए यह सम्भव न था। मुयीन घर आकर औंधे मुँह लेट गया। तीन दिन वह घर छोड़कर नहीं गया। तीसरे दिन उठकर मुयीन काजी के घर की ओर निकला। "मुझे चोर नहीं मिला है। मौत की सजा दीजिये।" काजी से यह कहने के लिए उसने निश्चय कर लिया था।

मुयीन एक गली में से जा रहा था कि उसने सिर उठाकर देखा। दुमंजिले से, किसी स्त्री ने चिक हटाकर उसको ऊपर आने का संकेत किया। उसको मुयीन ने तुरत पहिचान लिया। यह वही स्त्री थी।

मुयीन जल्दी जल्दी जीने पर चढ़कर ऊपर गया। उसने हँसते हुए सामने आकर कहा—"मेरे कारण आप खासी आफत में फँसे हैं।"

"मैं तुम्हारे लिए तीन दिन से सारा शहर छान रहा हूँ। क्या मतलब है तुम्हारा? मैंने तो तुम्हारी मदद इसलिए की थी कि तुम अपनी सहेली की सहायता कर सकोगी, पर तुमने काजी का रुपया क्यों चुराया?" मुयीन ने उससे पूछा।

"क्यों? क्योंकि वह निरा कंजूस है। पैसे के बारे में तुम क्यों उलझते

हो! क्योंकि अब तुम्हारे जान पर आ पड़ी है, इसलिए मैं तुम्हें बचाने के लिए एक तरीका बताती हूँ। सुनो। यह काजी तुम पर इल्जाम लगायेगा। तुम उससे पहिले उस पर इल्जाम लगाओ। उसकी रसोई में एक मर्तबान है, तुम यह दिखाओ कि सारे घर की तालाशी ले रहे हो। उस मर्तबान के पास जाओ, उसमें से कपड़े निकालो। उसमें वे ही कपड़े होंगे जो मैंने रात में पहिने थे। वे खून से लथपथ होंगे। उनके खुलते ही यह काजी, जो अभी शेर बना हुआ है, भीगी बिल्ली बन जायेगा। तब वह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेगा।" उस स्त्री ने, उसके हाथ में सौ दीनारें रखते हुए कहा।

मुईन की जान में जान आई। वह सीना तानकर काजी के घर गया। काजी ने उसको देखते ही पूछा—"अरे निकम्मे! मेरा पैसा कहाँ है? वह चोर कहाँ है?"

"मैं, यह आपसे ही पूछने आया हूँ। मैंने और मेरे सिपाहियों ने, यकीन मानिये, सारा शहर छान डाला है। उस लड़की का ठिकाना किसी को नहीं मालूम है। उसको आपके घर में पैर रखते मैंने और मेरे आदमियों ने देखा है। आपके घर से बाहर जाते हुए उसे किसी ने नहीं देखा है। वह लड़की नहीं तो उसका शव यहीं कहीं होगा। उसको खोजना कोतवाल के नाते मेरा फ़र्ज़ है।" मुईन ने रौब से कहा।

काजी का मुँह फीका पड़ गया। थोड़ी देर तक उसके मुख से बात न निकली। आखिर उसने कहा—"जो तुम कह रहे हो वह असम्भव है। उसे किसी ने नहीं मारा है। कोई क्यों उसे मारेगा! फिर चोरी गये छः हज़ार दीनारों के बारे में क्या कहते हो!" उसने पूछा।

"क्या उसके लिए कोई गवाही है। आप ही तो केवल कह रहे हैं।" कोतवाल ने पूछा।

मुयीन ने सारा घर खोजा, आंगन खोजा। कहीं लड़की का पता न था। पता नहीं लगेगा, यह वह जानता ही था। आखिर उसने ऐसी शक्ल बनाई, जैसे गलती की हो....फिर रसोई घर में आकर वह एक खम्भे के सहारे खड़ा हो गया। उस कमरे के कोने में एक मर्तबान था।

अब काजी का हौसला कुछ बढ़ा। उसने कोतवाल से पूछा—"कहाँ है उस लड़की का शव!—तुमने तो कहा था कि मैं ही हत्यारा हूँ। यह भी बताया कि मैंने पैसे की चोरी के बारे में झूट कहा था। यह सब साबित क्यों नहीं करते! मुझपर ही तुम ने अपराध थोपा।" वह ज़ोर से चिल्लाया। मुयीन ने सिर उठाकर कहा—"खून की गन्ध....उस मर्तबान की ओर से आ रही है।" कह कर वह झट मर्तबान के पास गया....और उस में हाथ रखकर, एक गठ्ठर निकाला। उस गठ्ठर के खोलने पर, उस में खून से लथपथ कपड़े थे। काजी पहिचान गया कि ये कपड़े उस लड़की के ही थे, जो उस के घर ठहरी थी।

उसने कांपते हुए कोतवाल से कहा—"मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मैं शपथ करके कहता हूँ कि मैंने उस लड़की को नहीं मारा है। परन्तु अगर इस पोषाक के बारे में अफवाह फैली तो मेरी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिलेगी। अगर तुमने यह तहकीकात यहीं खतम कर दी तो मैं तुम्हारा कृतज्ञ होऊँगा।" उसने उसके हाथ पकड़ लिये। कोतवाल ने काजी के पास से एक हज़ार दीनारें लीं। और उन कपड़ों को काजी के सामने ही जलाकर वह अपने रास्ते चला गया।

[८]

[जादूगरनी कपालिनी ने चन्द्रवर्मा का आतिथ्य किया। अपने नौकर भैरव से उसको दावत भी खिलवाई। फिर उसने उससे कहा कि वह शंख नाम के मान्त्रिक के यहाँ से अपूर्व शक्तिवाला शंख उसे लाकर दे। उसने बताया कि अगर उसने कुछ जड़ी बूटियों का कषाय उसमें डालकर पिया तो वह हज़ार वर्ष फिर से सुखपूर्वक जी सकेगी। चन्द्रवर्मा उसकी बात मान गया, और चल पड़ा। बाद में:—]

आगे रास्ता दिखाते कालसर्प के पीछे पीछे चन्द्रवर्मा चलने लगा। सर्प चारों ओर सिर घुमाता, फुँकारता, पेड़ों के झुरमुट में जाने लगा। पेड़ों के नीचे अनेक क्रूर जन्तु और विष सर्प उसको दिखाइ दिये। परन्तु वे कालसर्प को देखते ही इधर उधर भागने लगे।

इस तरह जंगल में कुछ दूर जाने के बाद चन्द्रवर्मा को यकायक एक सन्देह हुआ कि कालसर्प मनुष्यों की भाषा समझ सकता है। जादूगरनी ने उससे उसी तरह बातचीत की थी, जैसे कि औरों से। उसने मनुष्यों की भाषा में ही उसे आज्ञा दी थी। परन्तु उसने उसको मनुष्यों की भाषा में बातें करता नहीं देखा था। अगर कोशिश की गई तो पता लग जायेगा कि वह बात कर सकता है कि नहीं!

चन्द्रवर्मा ने यह सोचकर, जल्दी जल्दी, कालसर्प के सिर के पास जाकर पूछा—"कालसर्प, हमें इस जंगल को पार करने के लिए कितनी दूर और चलना होगा !"

चन्द्रवर्मा का प्रश्न सुनते ही कालसर्प तुरत रुक गया। उसके तीनों सिर, एक साथ भूमि पर से उठे और ठीक चन्द्रवर्मा की आँखों में देखने लगे। फिर उसने अपनी जीभ निकालकर हल्का-सा शब्द किया। वह ध्वनि, उसकी साधारण फुँकारों की तरह न थी। और उसके बाद एक के बाद एक भिन्न ध्वनि उसको सुनाई दी।

चन्द्रवर्मा को आश्चर्य हुआ। अपने तीनों सिरों को इधर उधर घुमाकर, रास्ते से हटकर, एक ओर दिशा की ओर वह इस तरह चला, जैसे वह चन्द्रवर्मा का आश्चर्य जान गया हो। उसने उसको पीछे आने का संकेत किया।

चन्द्रवर्मा ने समझा कि कालसर्प उसे कोई भेद बताने वाला था। इसलिए बिना किसी शंका के वह उसके पीछे चलने लगा। थोड़ी देर में वे पेड़ों के घने झुरमुट से बाहर एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ एक नाला बह रहा था।

कालसर्प नाले के पास रुका। अपने सिर से, उसने नाले के पारवाले एक विचित्र वृक्ष की ओर दिखाया। चन्द्रवर्मा के उस तरफ़ देखते ही विचित्र हँसी, हो हल्ला सुनाई दिया। इस विचित्र ध्वनि करनेवाले वृक्ष को देख चन्द्रवर्मा मूर्ति की तरह खड़ा हो गया। स्तब्ध।

वह एक विचित्र वृक्ष था। चालीस पचास फीट ऊँचे उस घने वृक्ष पर कई पशु पक्षियों के सिर लटक रहे थे।

वे चन्द्रवर्मा और कालसर्प को देखते ही पशुओं और पक्षियों की तरह जोर जोर से चिल्लाने लगे।

चन्द्रवर्मा ने वृक्ष की तरफ़ से नजर हटाकर कालसर्प की ओर घुमाई। कालसर्प उसकी ओर चुपचाप देख रहा था। चन्द्रवर्मा कुछ देर तो चुप रहा, फिर कुछ सोचकर, विचित्र वृक्ष की ओर दिखाते हुए उसने पूछा—"यह वृक्ष है! या वृक्ष के रूप में कोई भयंकर राक्षस है!"

कालसर्प सिर घुमाकर नाले की ओर चला। चन्द्रवर्मा उसके पीछे गया। थोड़ी देर बाद, उस विचित्र वृक्ष के पास आकर रुका। चन्द्रवर्मा के वहाँ आते ही, वृक्ष से और भयंकर आवाज आने लगी। चन्द्रवर्मा ने अपने को ढाढ़स बंधाया। अगर काल सर्प उसे धोखा देकर मारना भी चाहे, तो वह कुछ न कर सकता था। उस जंगल में घुसते ही वह जादूगरनी की मन्त्रशक्ति के आधीन हो गया था। उसका बल, और तलवार उसकी उन मन्त्र-तन्त्रों के प्रभाव से रक्षा नहीं कर सकते थे। अगर उसका भला या बुरा कुछ भी हुआ तो वह जादूगरनी कपाल्नी की आज्ञा पर ही होगा।

चन्द्रवर्मा यह सोच रहा था कि कालसर्प ने उसके पास आकर, सिर उठाकर वृक्ष की ओर संकेत किया। चन्द्रवर्मा जान गया कि सर्प उसे वृक्ष पर चढ़ने के लिए कह रहा था। उसने तलवार निकाली, निर्भय हो पेड़ के पास गया। उसने उसके तने में तलवार भोंकी। तुरत इतना भयंकर हाहाकार मचा कि सारा जंगल गूँज उठा। कालसर्प भी शरीर समेट कर, भय से कांपता कांपता-सा चन्द्रवर्मा के सामने सरका। चन्द्रवर्मा की स्थिति ऐसी थी कि वह यह सब न समझ पाता था। उसने

उन पशु पक्षियों के सिरों को काटने का निश्चय कर लिया था, जो वृक्ष से चिपके चिपके भयंकर शब्द करके उसे डराने की कोशिश कर रहे थे।

कालसर्प पेड़ के तने के पास गया। उसको अपने शरीर से लपेटकर उसने एक बार टहनियों की ओर देखा। वह क्या कहना चाह रहा था, यह जानकर चन्द्रवर्मा तुरत पेड़ पर चढ़ने लगा। वृक्ष से लटके पशु और पक्षी निरन्तर शोर करते जाते थे। चन्द्रवर्मा निर्भय हो टहनियों पर गया। उसने अपनी तलवार से एक ऐसी चीज़ को काट डाला, जिसका सिर शेर के सिर की तरह था, और जो शोर करके उसे डरा रहा था। वह तुरत नीचे गिर गया। चन्द्रवर्मा के आश्चर्य की सीमा न थी। भूमि पर गिरकर वह शेर का सिर एकदम एक फल में बदल गया।

चन्द्रवर्मा के जल्दी जल्दी पेड़ से उतरते ही कालसर्प उस फल को मुख में रखकर, उसकी ओर मुड़ा। चन्द्रवर्मा ने उस फल को लेकर, काट कर देखा। उसी समय उसको ऐसा लगा जैसे कालसर्प ज़ोर से हँस रहा हो। चन्द्रवर्मा ने उनकी ओर देखा।

"चन्द्रवर्मा! अब पता लगा इस वृक्ष के विचित्र सिरों के बारे में!" कालसर्प ने पूछा।

इस प्रश्न से चन्द्रवर्मा को सब कुछ मालूम हो गया। जब वह फल खा ही रहा था, तभी उसको कालसर्प की बातें समझ में आने लगी थीं। तब तक वह जो ध्वनि कर रहा था वह एक फुँकार की तरह ही थी।

"उस फल को खाने से तुझे, पशु और पक्षियों की भाषा समझ में आने लगी।

मान्त्रिक शंख के पास पहुँचने के लिए उसके अपूर्व शक्तिवाले शंख को लाने के लिए यह ज्ञान तुम्हारी कितनी ही मदद करेगा। तुम्हें इस तरह काम करना होगा कि उसके नौकर, अग्नि पक्षी से तुझे कोई खतरा न हो। अर चूँकि तुम सब प्राणियों की भाषा समझ सकोगे, इसलिए तुम्हें अपने प्रयत्न में सफलता मिल सकती है।" कालसर्प ने कहा।

चन्द्रवर्मा को बड़ी खुशी हुई। उसने कृतज्ञता भरी आँखों से कालसर्प की ओर देखते हुए कहा—"कालसर्प, तुमने मेरी बड़ी मदद की। तुम इसके बदले में मुझ से क्या लेना चाहोगे!"

कालसर्प ने सिर नीचा करके कहा—"मैं जो मदद चाहता हूँ, ऐसी खास बड़ी नहीं है। फिर भी मुझे तब तक प्रतीक्षा करनी होगी, जब तक तुम शंख से, अपूर्व शक्तिवाला शंख नहीं ले आते। इससे पहिले मेरा कुछ माँगना ठीक नहीं है।"

कालसर्प के यह कहते ही, चन्द्रवर्मा ने तभी जानना चाहा कि वह क्या सहायता चाहता था। उसने सन्देह भरी दृष्टि से कालसर्प की तरफ़ देखकर पूछा—"कालसर्प! क्या तुम सचमुच सर्प हो! नहीं तो मनुष्य हो!"

"एक समय था, जब मैं सर्प नहीं था। मनुष्य ही था। शंख का शिष्य था। उसके भेजने पर, मैं कपालिनी की हानि करने आया और पकड़ा गया। और साँप बना दिया गया। तब से वह मुझसे अपने नौकर का काम ले रही है। तुम अपने प्रयत्न में सफल होकर जब आओगे, तब मेरा इस तुच्छ जीवन से उद्धार कर सकोगे।" कालसर्प ने विनयपूर्वक कहा।

"इसके लिए तुझे मेरे लौटने तक प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं है। अभी लौटकर कपालिनी के पास चलें। वह मेरी बात न ठुकरायेगी। मैं उससे कहूँगा कि वह फिर तुझे मनुष्य बना दे।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

इसके लिए कालसर्प नहीं माना। "वर्मा, तुम कपालिनी को पूरी तरह नहीं जानते। बहुत शकी है वह। वह यह भी शक कर सकती है कि हम दोनों मिलकर उसका कुछ बुरा करने जा रहे हैं। अगर यह हुआ तो मेरे साथ तेरा भी बुरा होगा। इतने दिनों से यह सर्प की जिन्दगी जी ही रहा हूँ, थोड़े दिन और काट दूँगा। मैं प्रतीक्षा करूँगा।" कालसर्प ने कहा।

चन्द्रवर्मा को कालसर्प की बातों में सचाई दीख पड़ी। जादूगर और जादूगरनियों पर विश्वास नहीं करना चाहिये। यह अनुमान करना कठिन है कि कब किन पर उनको कैसा सन्देह होता है। चन्द्रवर्मा यह सोचकर, पेड़ के पास से आगे बढ़ा। कालसर्प पहिले की तरह उसे रास्ता दिखाने लगा।

ठीक दुपहर के समय वे घने जंगल से पार हो सके। सामने बड़े बड़े पहाड़ और घाटियाँ दिखाई दीं, वहाँ भी पेड़ पौधे तो थे, पर जंगल बहुत घना न था। ठीक ठीक रास्ता न था।

"चन्द्रवर्मा! मैं अब वापिस चला जाऊँगा। कपालिनी की आज्ञा से मैंने तुझे इस जंगल से पार करा दिया है। अब आगे तुझे अकेले ही जाना होगा। उन पहाड़-घाटियों में तुझे कदम कदम पर शायद खतरों का सामना करना होगा। अगर तुमने हिम्मत न हारी तो, पशु और

पक्षियों की भाषा के ज्ञान के कारण सब विपत्तियाँ टल सकेंगी। सदा हिम्मत रखो।" कालसर्प ने कहा।

उसके बाद, चन्द्रवर्मासे विदाई लेकर, कालसर्प, फुंकारता, उस रास्ते पर वापिस जाने लगा, जिस रास्ते आया था। चन्द्रवर्मा उसकी ओर तब तक देखता रहा, जब तक वह आँखो से ओझल न हो गया,—फिर चन्द्रवर्मा लम्बी साँस छोड़कर, आगे चलने लगा।

रास्ता, छोटे बड़े पत्थरों के और काँटों के कारण ऊबड़-खाबड़ था। कहीं कहीं गगनचुम्बी वृक्ष थे। वहाँ के पशु, जो शोर कर रहे थे, वह चन्द्रवर्मा आसानी से सुन सकता था। फर्क यह था कि वह उनकी आवाज में, उनकी भाषा समझ सकता था। वे आपस से एक दूसरे से कह रहे थे कि कोई नया प्राणी उनके रहने की जगह आया था।

सूर्य के पश्चिम दिशा के ओर जाने से पहिले, चन्द्रवर्मा ठीक उत्तर की ओर चलता रहा। तब उसे थकान के कारण बड़ी भूख लगने लगी। वह एक पेड़ की साया में, तने से लगकर बैठ गया, और
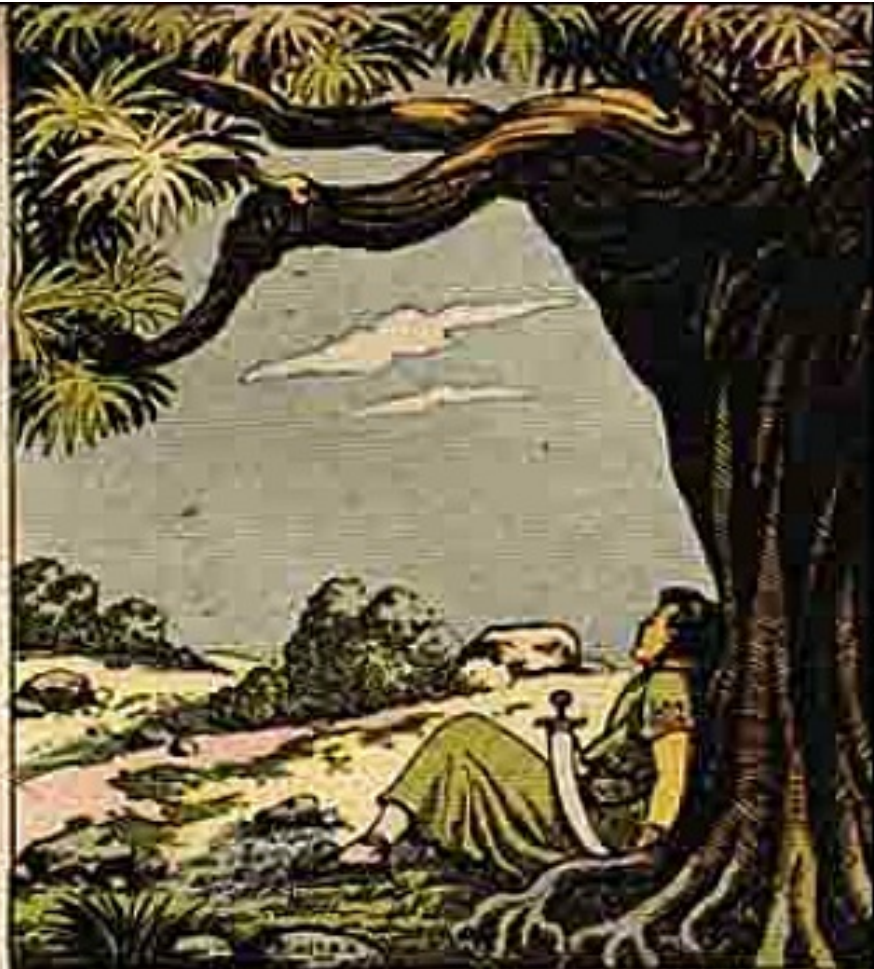
चारों तरफ देखने लगा। जहाँ तक नजर जाती थी, वहाँ तक कहीं फल के पेड़ नहीं थे। अगर वह कन्द-मूल भी खाने को तैयार था, तो वहाँ सिवाय काँटों और पत्थरों के कुछ न था। सुनसान बियावान जगह थी।

"फिजूल समय बिताने से कोई फायदा नहीं। अगर थोड़ी दूर और आगे गया....तो शायद फलों के वृक्ष मिलें।" यह सोच, चन्द्रवर्मा वहाँ से उठकर चल पड़ा। थोड़ी दूर जाकर....वह एक पत्थर का चक्कर लगाकर आगे गया था कि फलों से

लदे कई वृक्ष उसे दिखाई दिये। चन्द्रवर्मा बहुत आनन्दित हुआ। वह छोटे छोटे, पत्थरों और काँटों से बचता आगे बढ़ा। दो तीन मिनट बाद, उसे ऐसा लगा, जैसे गरम लूह चल रही हो। चन्द्रवर्मा चकित हो, थोड़ी दूर और गया। जहाँ वह खड़ा था, उससे कुछ दूर नीचे, एक नदी कल कल करती बह रही थी, वह गरम भाप-सी उगल रही थी।

चन्द्रवर्मा उस विचित्र नदी को देखकर आश्चर्य करने लगा। वह जान गया.... कि वह नदी किसी ज्वालामुखी पर्वत से आ रही थी....उसके कारण ही लूह चल रही थी। अगर भूख के कारण, मौत से उसे बचना था, तो हर हालत में उसे वह नदी पार करनी पड़ती। फल से लदे वृक्ष सब नदी के पार ही थे। इस तरफ़ पत्थर ही पत्थर थे।

चन्द्रवर्मा अभी सोच रहा था कि क्या किया जाय....कि एक बड़ा साँप, समतल प्रदेश से, ताड़ के पेड़ की तरह ऊपर उठा—और इस तरह झुका कि उसका सिर नदी के परले पार जाकर गिरा। फिर वह आगे सरकता पूँछ को धीमे धीमे हिलाने लगा। उसी समय चार पाँच बन्दर, किच किच करते, पेड़ पर से उतरकर साँप के ऊपर से नदी पार चले गये।

चन्द्रवर्मा जान गया कि अगर उसे उस पार जाना था तो उसे भी साहस करके साँप के ऊपर से भागना होगा और वह प्रयत्न भी साँप के उस पार जाने से पहिले ही करना होगा। यह सोच चन्द्रवर्मा वहाँ से हिला और एक छलाँग में साँप के पास गया और उस पर से परली तरफ़ भागने लगा। (अभी है)

तीन परीक्षायें

[२]

रशीद का काफ़ला, जिसने उसके भाई और ऊँटों को पकड़ रखा था तीन दिन में मक्का पहुँचनेवाला था कि कनाना उस काफ़ले से आ मिला। वह मुँह पर पगड़ी डालकर तीन दिन उसके साथ चलता रहा, और जो कुछ मालूम किया जा सकता था, उसने मालूम कर लिया।

रशीद का काफ़ला, एक दिन दुपहर को मक्का पहुँचा। उस समय खलीफ़ा उमर किसी और आदमी से बातचीत करता मुसलमानों के लिए सब से अधिक पवित्र स्थान, काबा के दरवाजे के पास खड़ा था। रशीद के ऊँटों में माल ढोनेवाले कई ऊँट पीछे रह गये थे। खाली ऊँट काबा के पास आ गये थे। उन सब के आगे सफेद ऊँट शान से चला आ रहा था—"वह मरुभूमि भयंकर" का था। उस पर कनाना का बड़ा भाई था।

जब ऊँट एक एक करके पैर मोड़कर बैठ रहे थे, तब कनाना वहाँ पहुँचा। उस लड़के ने, जो कनाना को रास्ता दिखाता आया था, कहा—"ये हैं खलीफ़ा।" उसने खलीफ़ा को दिखाया।

कनाना ने अपना मुहँ ढके रखा। खलीफ़ा के पास जाकर, सलाम करके, कहा—"खलीफ़ा उमर के लिए पत्र!" उसने मरते हुए सैनिक द्वारा दिया हुआ पत्र उसे दिया। अपनी पगड़ी हटाकर अपना मुँह खलीफ़ा को दिखाया।

"तुम्हारी तो अभी दाढ़ी मूँछ भी नहीं आई है। क्या तुम जानते हो इस चिट्ठी में क्या लिखा है!" खलीफ़ा ने पूछा।

मोहम्मद यूसुफ

सैनिक ने जो बात उसे बतायी थी, उसने उसे खलीफ़ा से कह दी।

"जो इतनी मुख्य चिट्ठी लाया हो उसका मक्का की गलियों में अकेला घूमना अच्छा नहीं!" खलीफ़ा ने कहा।

"हुजूर, गौर करें कि मैं इस चिट्ठी को होर पहाड़ से अकेला ही लाया हूँ।" कनाना ने कहा।

जब खलीफ़ा को मालूम हुआ कि कनाना को कैसे वह चिट्ठी मिली थी—तो उसने उससे कहा—"तुम बहुत साहसी हो। जबतक मैं वापिस आऊँ तुम मेरे घर जाकर रहो।" उसने एक नीग्रो गुलाम के साथ उसको अपने घर भेज दिया।

गुलाम के साथ जाते कनाना ने सोचा—"मेरी परीक्षा खतम हो गई है। खलीफा को मैंने चिट्ठी पहुँचा दी है। खलीफा ने मुझे साहसी भी बताया है। अगर मैंने सफेद ऊँट को और भाई को छुड़वाकर—पिता की प्रशंसा पा ली, मुझे और क्या चाहिये, खलीफा को मुझे फिर देखने की क्या जरूरत है! वह गुलाम को चकमा देकर चला जाना ही चाहता था कि वे खलीफा के घर पहुँचे। एक बड़े फाटक में से वे संगमरमर के फर्शवाले आँगन में घुसे। उसे पारकर उन्होंने खलीफा के घर में पैर रखा। गुलाम, कनाना को एक जगह बिठाकर चला गया।

थोड़ी देर बाद खलीफा वहाँ आया। कनाना ने जमीन पर सिर लगाकर उसको सलाम किया। खलीफा ने बैठते हुए कहा—"बेटा, तुमने एक ऐसा काम किया है, जो कई बड़े बड़े साहसी नहीं कर पाते हैं। माँगो, क्या इनाम चाहते हो?"

"मुझे खलीफा के आशीर्वाद चाहिये।" कनाना ने कहा।

"उनकी तो कमी न होगी। और क्या चाहते हो!—ऊँट, भेड़, सोना!" खलीफा ने पूछा।

"मैं उनका क्या करूँगा! मुझे आशीर्वाद देकर कृपया मुझे भेज दीजिये।" कनाना ने कहा।

"तुमने तो मुझसे कुछ नहीं माँगा। मैं तुमसे कुछ माँगना चाहता हूँ। अल्लाह के लिए युद्ध करनेवाले सेनापतियों में, खालीद सब से अच्छा है। वह थोड़े दिनों में बसरा पहुँचकर, वहाँ से तीस हजार सैनिकों को लेकर फारस की ओर जायेगा। फारस जाने के बदले, वह सीरिया जाये—यह मैं एक चिट्ठी में लिखकर कुछ सैनिकों के साथ भेज रहा हूँ। यहाँ से बसरा तक तीन हफ्ताहों का सफर है। मैं इस बीच यह अपील कर रहा हूँ कि धर्म पर अभिमान करनेवाले उसके नेतृत्व में लड़ें। मेरी चिट्ठी ले जानेवाले सैनिकों के साथ तुम भी जाओ और तुम उसको वास्तविक स्थिति बताओ।"

"रास्ता बहुत मुश्किल है। इस मौसम में बसरा तक, रास्ते में एक बूँद भी पानी न मिलेगा। चोर डाकुओं का भय भी अधिक है।" कनाना ने कहा।

"तुम्हें कोई कष्ट न हो, किसी का भय न हो, इसकी मैं व्यवस्था करूँगा।" खलीफा ने कहा।

"मैं अपनी बात नहीं कह रहा हूँ। मैं आपके सैनिकों की बात कह रहा हूँ। जो इस चिट्ठी लानेवाले सैनिकों की गति हुई थी, वह गति इन सैनिकों की भी होगी। मैं कष्टों और आपत्तियों से डरनेवाला नहीं हूँ। वह चिट्ठी मुझे दीजिये। मैं वह खुद खालीद तक पहुँचाऊँगा।"

कनाना ने कहा । "क्या बिना साथी को लिए ही जाओगे?" खलीफ़ा ने पूछा ।

"साथी भी ऐसे होंगे जैसी यह तलवार, जो उठाई न जा सके ।" कनाना ने कहा ।

उसकी बातें सुनकर खलीफ़ा को आश्चर्य हुआ । "अच्छा, तो मैं तुम्हें चिट्ठी दूँगा । परन्तु उसकी नकल, मैं अपने सैनिकों द्वारा एक और रास्ते भेजूँगा । कब जाओगे तुम?" खलीफ़ा ने पूछा ।

"इसी समय—" कनाना ने कहा ।

"शाबाश, तुम्हें कितने ऊँट चाहिए? कितने नौकर चाहिए?" खलीफ़ा ने पूछा ।

"यहाँ आते आते, मुझे रास्ते में एक काफ़ला मिला । उस काफ़ले का पहिला ऊँट, सफ़ेद ऊँट मुझे बहुत जँचा । उसे और उसे चलानेवाले को मुझे दिलवाइये । मेरे साथ चलने के लिए एक और ऊँट और दो हफ़्ते के लिए काफ़ी रसद दिलवाइये ।" कनाना ने कहा ।

"सफ़र बीस दिन से अधिक का होगा ।" खलीफ़ा ने कहा ।

"जितना भार कम होगा उतनी तेजी से ऊँट चलेगा । और किसी के लिए यह सफ़र तीन सप्ताह का हो सकता है मेरे

लिए दो सप्ताह का ही है।" कनाना ने कहा।

खलीफ़ा ने अपने नौकरों को बुलाकर कहा—"आज जो काफ़िला आया है, उसमें एक सफेद ऊँट है। उसको, उसके हाँकनेवाले के साथ ले आओ। मेरे काले ऊँट को सफ़र के लिए तैयार करो।"

जल्दी ही सफ़र की तैयारियाँ खतम हो गईं। कनाना खलीफ़ा के घर से बाहर निकलकर उसके लिए लाये गये सफेद ऊँट पर चढ़ गया। उसका बड़ा भाई काले ऊँट को लिए खड़ा था। क्योंकि कनाना का मुँह ढका हुआ था इसलिए बड़ा भाई अपने भाई को पहिचान न सका। उसने इस तरह देखा जैसे पूछ रहा हो—"कहाँ जाना है?" कनाना ने कहा—"तयाफ।"

तयाफ मक्का से कुछ दूर, पूर्व में एक शहर था। कनाना का उस शहर का नाम बताना पासवाले कुछ आदमियों ने सुना। वे रशीद के आदमी थे। यह जानकर कि खलीफ़ा ने सफेद ऊँट माँगा है, उसे जैसे भी हो, वापिस लेने का निश्चय करके, उसने अपने आदमियों को यह जानने के

लिए भेजा कि वह किस ओर जा रहा था। उन्होंने रशीद की इच्छा के अनुसार जानकारी लाकर दी।"

* * *

जल्दी ही दो ऊँट, मक्का शहर से पूर्व की ओर निकले। वे मक्का के फाटक से निकले थे कि पाँच घुड़सवार उसी दिशा की ओर निकले।

सफ़ेद ऊँट पर सवार कनाना के मन में भय था। कहीं कोई न दिखाई देता था। अन्धेरा था। उसने पीछे मुड़कर देखा कि उसका कोई पीछा कर रहा था। उसने अपने भाई की ओर मुड़कर कहा—"क्यों चलते हो! वह काला ऊँट तेरे लिये ही आ रहा है। उस पर चढ़ो।"

"मालिक, सफ़ेद ऊँट मेरे बगैर नहीं चलेगा। वह मुझसे ही हिला हुआ है।" कनाना के भाई ने कहा।

"यूँ ही बात न करो, जो मैं कहता हूँ वह करो। उस काले ऊँट से अधिक तेज़ चलनेवाला ऊँट मक्का में नहीं है। वह खलीफ़ा का अपना ऊँट है। उस पर चढ़कर, अगर तुम मेरे साथ चल सके तो हम रशीद की आँखों में धूल झोंक सकते हैं।" कनाना ने कहा।

रशीद का नाम "मालिक" के मुँह सुन, कनाना के भाई को आश्चर्य तो हुआ, मगर वह तुरन्त काले ऊँट पर सवार हो गया।

कनाना के कहते ही सफ़ेद ऊँट चल पड़ा। उसके बाद काला ऊँट अपने आप चला। जब ऊँट रुके थे। तभी दूरी पर घुड़ सवार रुके। उनका क्या मतलब था, यह साफ़ हो गया।

कनाना अपने सफ़ेद ऊँट को तेज़ी से चलाने लगा। घुड़सवारों ने भी अपनी

रफ्तार तेज़ की। कनाना अपने ऊँट की गति तेज़ करता गया। काला ऊँट उसके साथ चलता गया। उसके साथ घुड़सवार भी अपने घोड़ों को और तेज़ी से भगाने लगे।

कनाना ने सफ़ेद ऊँट को खूब ज़ोर से भगाया। काला ऊँट थोड़ा पीछे रह गया। घोड़े और भी पीछे रह गये। परन्तु ऊँटों की गति कम न हुई। वह पड़ाव आया, जहाँ मक्का से आते लोग ठहरा करते थे। पर ऊँट वहाँ न रुके। तयाफ़ से आता एक काफ़ला मिला। वह मक्का की ओर चला गया।

उसके आँखों से ओझल होते ही कनाना ने अपने ऊँट को उत्तर पूर्व की ओर मोड़ा। उसके भाई को अचरज हुआ। मक्का से फ़ारस जाने के रास्ते का दूसरा पड़ाव भी आया। पर कनाना ने अपना ऊँट वहाँ भी न रोका।

काला ऊँट पीछे रह गया था। कनाना का भाई उसे मारकर आगे लाया। उसने कहा—"मालिक, हम तयाफ़ की ओर नहीं जा रहे हैं।"

"नहीं...." कनाना ने कहा।

"मालिक, वह ऊँट मर जायेगा।" कनाना के भाई ने कहा।

"एक रात में नहीं मरेगा। पहिले तुम अपने प्राणों की रक्षा करो।" कनाना ने कहा। सफ़ेद ऊँट की गति कम न हुई। ख़लीफ़ा का काला ऊँट पीछे रहता गया।

सूर्योदय के समय कनाना ने सफ़ेद ऊँट को रोका। थोड़ी देर में काला ऊँट भी आ मिला। भाई के पहुँचने पर कनाना सवेरे की नमाज़ पढ़ रहा था। फिर दोनों ने भोजन किया। कनाना के भाई ने बहुत कोशिश की कि ख़लीफ़ा के दूत का मुँह देखे, परन्तु पगड़ी के ओट में उसे मुँह न दिखाई दिया।

वे दिन भर सोकर शाम को उठे। "मालिक, आज रात उस ऊँट को उतनी तेज़ न चलाइये। उसे चार सप्ताह से आराम ही नहीं मिला है। उसे तंग करने की अपेक्षा, अगर आप मुझे मार भी दें तो मैं सन्तुष्ट होऊँगा।" कनाना के भाई ने कहा।

"उसे जैसे चलाना है, तुम ही चलाओ। मैं काले ऊँट पर चढूँगा। इसके बाद, तुम अपने रास्ते जाओ, मैं अपने रास्ते। तेरा रास्ता मैं ही बताता हूँ। तुम सीधे उत्तर की ओर जाओ। तुम्हें दस दिन जाना होगा।" कनाना ने कहा।

"मुझे क्या करना है?" भाई ने पूछा।"

"बेनीसाद टोली से मिलकर, 'मरुभूमि भयंकर' से कहो कि कनाना ने अपना वचन पूरा कर दिया है।" कहते हुए कनाना ने काले ऊँट की नकेल खींची।

"आप कौन हैं?" कनाना का भाई चिल्लाया।

कनाना पीछे मुड़ा। मुँह पर का कपड़ा हटाकर उसने कहा। "मैं तेरा भाई हूँ, कनाना।" वह तेज़ी से फिर आगे भाग गया।

"कनाना, भाई...." बड़ा भाई चिल्लाया। परन्तु घने अन्धकार में काला ऊँट गुम-सा हो गया। "मेरे भाई को, बिना ज़रूरी मदद के और हथियार के, इस तरह अकेला नहीं जाना चाहिये।" सोचकर उसने अपने सफ़ेद ऊँट को ज़ोर से मारा। उसको मारता देख, सफ़ेद ऊँट अकड़ गया। फिर भी उसने एक घंटे तक भाई की खोज की। पर वह न मिला। कनाना का भाई दुखी हो अपने ऊँट को उत्तर की ओर ले गया।

(अभी और है)

विक्रमार्क जिद का पक्का था। वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ से शव उतार कर, कन्धे पर डाल चुपचाप श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव में स्थित वेताल ने कहा—"राजा! तुम सब तरह से समर्थ हो। सब तुम जैसे नहीं होते। कई, जो कुछ बातों में बहुत तेज होते हैं, कई और बातों में बिल्कुल निकम्मे होते हैं। यह दिखाने के लिए मैं तुम्हें रत्नवेदी की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यह कहानी सुनानी शुरू की।

कुछ समय पहिले, होयसाल राज्य में एक चिरकीर्ति नाम का व्यक्ति रहा करता था। वह सब प्रकार के हीरे खरीदता और उनको चमकाकर जौहरियों को बेचकर अपनी आजीविका चलाता। हीरे खरीदकर

वेताल कथाएँ

उनको चमकाना कोई बहुत फायदेमन्द व्यापार नहीं है। जो चार पाँच हीरों से लाभ हो सकता था वह एक में आ भी सकता था। क्योंकि हीरे का उस प्रारम्भिक दशा में मूल्य आँकना आसान काम नहीं है।

चिरकीर्ति के एक लड़का था। नाम था, रत्नवेदी। कहीं ऐसा न हो कि उस आजीविका के अवलम्बन से, लड़का भी उसके जैसा रह जाय, चिरकीर्ति ने रत्नवेदी को पढ़ाया-लिखाया।

तब रत्नवेदी की उम्र बारह वर्ष की थी। चिरकीर्ति उसको अपने साथ जौहरी के पास ले गया। क्योंकि वह जौहरी कहीं से अपूर्व हीरा लाया था इसलिए उसके घर भीड़ थी।

पिता और पुत्र भीड़ को चीरते अन्दर गये। जौहरी ने चिरकीर्ति से कहा—"क्या यह हीरा देखा है? इसे पश्चिम के पहाड़ में मैंने स्वयं चुना है। बहुत मेहनत भी न की। अब इसको लाख मुहरें देकर लोग माँग रहे हैं।"

उन दोनों में व्यापार के बारे में कुछ बातचीत हुई। रत्नवेदी उस हीरे को ही देखता रहा। उसको हाथ में रखकर, उसने उसके सौंदर्य, भार, चमक आदि की जाँच पड़ताल की। फिर पिता पुत्र वापिस घर चले आये।

इस घटना के बाद रत्नवेदी को रत्न खोजने की सूझी। अगर उसे भी एक वैसा हीरा मिल गया, तो तीन पीढ़ी तक गरीबी पास न फटकेगी। परन्तु उसने पिता से कुछ न कहा।

दो वर्ष और बीत गये। चिरकीर्ति बीमार पड़ा। जो कुछ जमा था, वह उसकी चिकित्सा पर खर्च हो गया, तो भी उसकी बीमारी ठीक न हुई।

पिता के मरते ही रत्नवेदी पर अपने और अपनी माता के भरण-पोषण की जिम्मेवारी पड़ी। जब माँ ने पूछा—"बेटा, क्या करोगे?" तो उसने कहा—"माँ, मैं भी हीरों को चमकाना सीखूँगा। जो कुछ मिलेगा, गुजारा कर लेंगे।"

माँ मान गई। रत्नवेदी एक गुरु के यहाँ हीरे चमकाने के काम पर लग गया। उसे मालूम हो गया कि हीरे किन पत्थरों में मिल सकते थे।

और दो वर्ष के बाद, उसने अपने गुरु से कहा—"मैं अपने मामा के घर जाकर दो सप्ताह में वापिस आ जाऊँगा।" उसने उससे अवकाश ले लिया। माँ से भी यह कहकर वह मामा के घर गया। उसका घर पश्चिमी पहाड़ की तलहटी में था।

वहाँ पहुँचने के अगले दिन ही, एक थैले में, छेनी, हथौड़ा आदि रखकर थोड़ा बासा भात ले, मामा से यह कहकर—"पहाड़ में जाकर हीरे ढूँढूँगा।" वह घर से निकला।

"पागल! सोलह साल भी पूरे नहीं हुये हैं, यह क्या हीरे ढूँढेगा!" मामा यह सोच हँसा।

रत्नवेदी, उस दिन बिना आराम किये पहाड़ में घूमता रहा। जिस जिस पत्थर में हीरे के होने की सम्भावना थी, उसने उसको काटकर अपने थैले में रख लिया। दिन भर उसने पत्थर जमा किये। पर थैला आधा भी न भरा। इसलिए उस दिन आधा भात खाकर वहीं पहाड़ पर रात को सो गया। अगले दिन शाम को थैला भर गया। उस दिन वह मामा के घर वापिस गया।

उसके लाये हुये पत्थरों को देखकर उसके मामा ने पूछा—"क्या इन पत्थरों में भी कोई हीरे होंगे?"

"कम से कम तीन सौ मुहरों की कीमत के हीरे होंगे।" रत्नवेदी ने कहा।

उसका मामा कम्बल बुनकर, उन्हें बेचकर, जिन्दगी बसर किया करता था। साल भर कम्बल बनाकर, बेचने पर तीन सौ मुहरों का फायदा न होता था। इसलिए भानजे की बात सुनकर उसे अचरज हुआ। रत्नवेदी की यह बात गलत थी कि उनमें तीन सौ मुहरोंवाले हीरे थे, पर इधर उधर के कई हीरे थे, जिनका दाम डेढ सौ मुहरें था। रत्नवेदी तो गरीब था ही, उसने माँ को सौ मुहरें देकर आवश्यक चीज़ें खरीदने के लिए कहा।

उसे यह भी हौसला हुआ कि किसी न किसी दिन वह कीमती हीरा भी ढूँढ निकालेगा। इसलिए अगले साल वह मामा के घर गया। तीन चार दिन की रसद लेकर, वह पहाड़ गया—जिस किसी पत्थर में हीरे के होने की गुंजाइश थी उसको काटकर, उसने अपने बोरे में रख लिया—उसके भरने पर वह वापिस गया। उसने उन पत्थरों को गुरु के

सामने डालकर पूछा—"क्या इनमें किसी में हीरा है?"

रत्नवेदी के गुरु ने एक एक पत्थर को जांचा, सिर फेरकर एक कोने में फेंक दिया। रत्नवेदी निरुत्साहित नहीं हुआ क्योंकि उसे भी उन पत्थरों के बारे में कोई विश्वास न था। एक पत्थर के बारे में ही उसे कुछ उम्मीद थी। उस पत्थर के बारे में गुरु क्या कहेगा, यह जानने के लिए वह उत्सुक था।

गुरु ने आखिर उस पत्थर को उठाया—उसे काफ़ी देर तक देखा। फिर उसे भी कोने में फेंककर कहा—"तेरी सारी मेहनत बेकार है। किसी भी पत्थर में कोई हीरा नहीं है।"

रत्नवेदी को सन्देह हुआ कि गुरु ने उससे झूट कहा है। उस दिन वह चुप चाप—उस कमरे में गया जहाँ हीरों पर चमक लगाई जाती थी। दीये की रोशनी में अपने लाये हुए पत्थर ढूँढे। वहाँ वे सब पत्थर तो थे, पर गुरु ने जो अन्त में पत्थर देखा था, वह न था। उसका सन्देह और भी पका हो गया।

बगलवाले कमरे की अलमारी में चमकाये हुए हीरे रखे हुए थे। रत्नवेदी ने उस

कमरे में जाकर आधे चमकाये हुए हीरे के पत्थर को देखा। उन पत्थरों में वह हीरा इस तरह चमक रहा था जैसे बादलों में से चन्द्रमा निकल रहा हो।

वह जान गया कि गुरु ने उसे धोखा दिया था। रत्नवेदी ने उस पत्थर को लेकर अपनी जेब में रख लिया। "तू चोर है—मैं तेरे नीचे काम नहीं करूँगा।" यह सोच, एक छोटे पत्थर को अलमारी में रख वह घर चला गया।

पूरी तरह चमकाने के बाद उस हीरे को देखकर रत्नवेदी बहुत खुश हुआ। सम्भव है कि उसकी कीमत एक लाख मुहरें न हों पर आसानी से उसकी कीमत पचास हजार मुहरें हो सकती थी। उससे उसकी गरीबी हमेशा के लिए हट सकती थी। रत्नवेदी सपने देखने लगा कि उस हीरे को अच्छे दाम पर बेचकर वह घर, बाग, जमीन जायदाद खरीदेगा।

परन्तु उतने कीमती हीरे को बेचना सुगम न था। लोगों को मालूम होना चाहिये था कि उसके पास उतना कीमती हीरा था। अगर एक दो को ही दिखाया तो उसको उसकी पूरी कीमत न मिल सकेगी। इसलिए उसने उसे किसी को न दिखाया। अच्छे मौके की प्रतीक्षा करने लगा।

उसको मौका एक दो महीनों में मिल गया। शहर में एक बड़ा मेला लगा। उस मेले में भिन्न भिन्न देशों से भिन्न भिन्न व्यापारी तरह तरह की चीज़ें लेकर आये। उनमें बीस से अधिक जौहरी ही थे। रत्नवेदी ने सोचा कि उस मेले में उसके हीरे के लिए ठीक कीमत निश्चित हो सकेगी।

वह मेले में, जौहरियों की दुकानें देखने लगा। वह एक दुकान से आकर्षित था। जितने हीरे जवाहरात और दुकानों में थे उन सब को मिलाकर उस एक दुकान में ही थे। उस दुकान का मालिक अपने रत्न मोतियों का एक ढेर लगाकर बैठा था। ढेर के बीच में एक मोती थी। रंग रंग के मोतियों के ढेर बड़े सुन्दर मालूम होते थे। रत्नवेदी ने उस ढेर को देखकर बूढ़े से पूछा—"आपके पास सब तरह के रत्न तो हैं, पर हीरे क्यों नहीं हैं? उस ढेर पर आपने जो मोती रख रखी है, अगर उसकी जगह हीरा रखा गया तो कितना अच्छा लगेगा।"

"मेरे पास सब तरह के रत्न हैं। तुम चाहे कितना बड़ा, किसी तरह का हीरा लाओ मैं उससे बड़ा, अच्छा तुम्हें दिखाऊँगा।" बूढ़े ने कहा।

"नहीं दिखा सकते। जितना बड़ा हीरा मेरे पास है, उतना बड़ा आपके पास नहीं हो सकता।" रत्नवेदी ने कहा।

"तुम्हारे हीरे की कितनी कीमत है? उसे बाहर रखो। अगर मैं उससे बड़ा हीरा दिखाऊँ तो उसे मुझे देकर तुम चले जाओ, अगर न दिखाऊँ तो तुम जो कुछ माँगोगे वह मैं तुम्हें मुफ्त दूँगा।" बूढ़े ने कहा।

वे इस तरह बातें कर रहे थे कि और जौहरी व्यापारी भी वहाँ इकट्ठे हो गये।

रत्नवेदी ने इस अभिमान में कि इतने आदमी देख रहे हैं, जेब में से हीरा निकालकर बाहर रखा। बूढ़े ने उसको देखकर कहा—"बेटा, तुम्हारी बात ठीक है यह हीरा पचास हज़ार मुहरों से अधिक कीमती है। परन्तु इससे बड़ा हीरा मेरे पास है।" उसने अपनी जेब में से हीरा निकाला।

यह वही हीरा था, जो उसने बारह वर्ष की उम्र में जौहरी के पास देखा था। रत्नवेदी बाज़ी हार गया। बूढ़े ने उसका हीरा ले लिया—रत्नों के ढेर में से मोती निकालकर उसकी जगह रत्नवेदी का हीरा रख दिया।

जो लोग जमा हो गये थे, उनमें तरह तरह की बातें हुईं। कई ने कहा—"उस छोटे लड़के को बूढ़े ने ठग लिया है।" कई और ने कहा—"पागल है, किसी और को बेचता तो पचास हज़ार मुहरें पाता।" परन्तु रत्नवेदी ने ये सब बातें न सुनीं। वह सिर नीचा करके अपने रास्ते चला गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—राजा! रत्नवेदी फ़िज़ूल अपना हीरा यों क्यों खो बैठा! उसने बूढ़े से शर्त क्यों लगाई? क्या इसलिए कि बूढ़े से शर्त जीतकर, पचास हज़ार मुहरों के रत्न ले सके! या नादानी की वजह से! अगर तुमने इन प्रश्नों का जान बूझकर जवाब न दिया तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

"रत्नवेदी नादान भी न था, न लालची ही। वह यही चाहता था कि लोग उसके हीरे के बारे में जाने, और उसकी कीमत आँकें। बाज़ी हार गया था, पर उसकी इच्छा पूरी हुई। हीरे के खोने से उसका नुकसान जो हुआ उसके बारे में! पहाड़ों में हीरे थे ही, उसे पता था कि वह उन्हें खोज सकता था। इसलिए उस हीरे को खोकर वह बहुत दुःखी न हुआ।" विक्रमार्क ने कहा।

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

सन्देह का भूत

सिसली का राजा, लियोन्टिस और बोहीमिया का राजा पोलिक्जिनीस दोनों बचपन के साथी थे। यानि, दोनों छुटपन में एक साथ खेले, एक साथ ही पढ़े, एक साथ सोये। एक ही थाली में वे खाया करते थे। मगर पिताओं के मरने के बाद उन्हें अलग होना पड़ा और वे भिन्न भिन्न देशों के राजा हुये।

लियोन्टिस की पत्नी, हर्मियोन बहुत सुन्दर और पतिव्रता थी। लियोन्टिस को उससे बड़ा प्रेम था। उनके एक लड़का भी था। जिसका नाम मेमीलियस था। उनका अनुकूल दाम्पत्य था। कोई कमी न थी। आराम से जी रहे थे। पर उसे एक ही बात मन में बींध रही थी—वह यह कि बचपन के साथी, पोलिक्जिनीस को वह देख नहीं पाया था। इस कमी को पूरा करने के लिए उसने पोलिक्जिनीस के पास खबर पर खबर भिजवाई कि वह उसके घर दो चार महीने ठहरे।

आखिर पोलिक्जिनीस एक बार सिसली आया। बचपन के साथी बहुत दिनों बाद मिले। लियोन्टिस की खुशी का तो ठिकाना ही न था। पति का पोलिक्जिनीस के प्रति प्रेम देख हर्मियोन ने भी पोलिक्जिनीस के आतिथ्य आदर में कोई कमी न की।

कुछ दिनों तक अतिथि सत्कार पाने के बाद पोलिक्जिनीस ने अपने मित्र से विदा लेनी चाही।

"अभी क्या जाओगे? तुम्हें तो आये हुये, ऐसा लगता है, दो रोज भी नहीं हुये। चार पांच सप्ताह के बाद चले जाना।" लियोन्टिस ने कहा।

रामगोपाल

"नहीं, यह न कहो। मैं फिर एक बार आऊँगा।" पोलिक्जिनीस ने कहा।

लियोन्टिस को बुरा लगा। उसने हर्मियोन से कहा—"हमारा अतिथि अभी जाने के लिये कह रहा है। मैंने बहुत कहा, पर वह सुनता ही नहीं है। तुम ही पूछकर देखो।"

पति की बात मानकर हर्मियोन ने पोलिक्जिनीस से कहा—"सुना है, आपने वापिस जाने का निश्चय कर लिया है। अगर आप चले गये तो हमें ऐसा लगेगा जैसे हमारा खजाना चला गया हो। अगर आप चार पाँच सप्ताह हमारे साथ रह सकें तो मैं और मेरे पति ऐसा समझेंगे जैसे हमें कोई वरदान मिला हो। हमें दुखी करके जाना भी कोई जाना है।"

पोलिक्जिनीस मित्र की बात को जितनी आसानी से ठुकरा सका था, उतनी आसानी से उसकी पत्नी की बात न ठुकरा सका। उसके इतना कहने पर न ठहरना अशिष्टता थी। वह रहने के लिए मान गया।

तबतक तो लियोन्टिस का हृदय निर्मल था। अब उसके मन में सन्देह पिशाच घर करने लगा। उसने सन्देह किया कि उसकी पत्नी और मित्र एक दूसरे को चाहने लगे थे, इसी वजह से, उसके कहते ही बिना कुछ कहे ठहरने को मान गया।

जब एक बार सन्देह का भूत मनुष्य के दिमाग में घुसता है, तो वह उसे पागल बनाकर छोड़ता है। लियोन्टिस की आँखों को अब सब कुछ सन्देहपूर्ण लगने लगा। सन्देह अब उसके हृदय को जलाने-सा लगा।

यह जलन लियोन्टिस न सह सका। उसने अपने मित्र, केमिलो को बुलाकर कहा—"तुम उस पोलिक्जिनीस को विष

देकर मार दो, जिसने मेरी गृहस्थी में सेंध लगाई है। यह मेरी आज्ञा है।"

केमिलो सब जान गया। वह जानता था कि हर्मियोन पतिव्रता थी और पोलिक्जिनीस पुण्यात्मा था। इसलिये उसने पोलिक्जिनीस को सब कुछ बताकर कहा—"महाराजा, आपका इस देश में रहना ठीक नहीं है। तुरत अपने देश चले जाइये। मैंने आपके प्राण बचाये हैं, इसलिये आप मेरे प्राण बचाइये। मुझे भी आप अपने साथ ले जाइये।"

उसी दिन रात को पोलिक्जिनीस बिना किसी को कहे केमिलो को साथ लेकर बोहीमिया के लिए निकल पड़ा।

पोलिक्जिनीस के भाग जाने से मानो लियोन्टिस को अपने सन्देहों के लिये सबूत मिल गया। उसने गर्भिणी हर्मियोन को कैद में डलवा दिया। अपने माँ बाप में इस आकस्मिक शत्रुता को देखकर, मेमिलियस को इतना दुख हुआ कि उसने चारपाई पकड़ ली।

जेल में हर्मियोन ने एक लड़की को जन्म दिया। लियोन्टिस के एक और मित्र, अन्टिगोनस की पत्नी, पोलीना ने, रानी के प्रसव में सहायता की। वह अच्छी तरह जानती थी कि हर्मियोन निर्दोष थी।

"राजा की रोज रोज अक्ल बिगड़ रही है। कम से कम इस बच्ची को देखकर तो उनका दिमाग सुधरेगा। इस बच्ची को मुझे दीजिये। मैं ले जाकर राजा को दिखाऊँगी।" पोलीना ने हर्मियोन से कहा।

हर्मियोन ने उस बच्ची को अच्छे कपड़े पहिना कर और बहुमूल्य गहने लगाकर राजा के पास भेजा। पोलीना लड़की को ले जाकर दरबार में बैठे लियोन्टिस के पैरों पर रखा और जो कुछ पूछना था, उसने उससे पूछा।

लियोन्टिस का पछताना तो अलग वह और क्रुद्ध हो उठा—"तुम अपनी पत्नी को बाहर भेजो।" उसने अन्टिगोनस को आज्ञा दी।

फिर उसने अन्टिगोनस से कहा—"उस वैसी की गर्भ से पैदा हुई लड़की मैं क्यों लूँ! इसे किश्ती में ले जाकर किसी द्वीप में छोड़ दो। वह खुद ही मर मरा जायेगी!"

अन्टिगोनस केमिलो की तरह न था। उसने राजाज्ञा में न्याय व अन्याय देखने की कोशिश न की। वह राजकुमारी को किश्ती में रखकर निकला। रास्ते में तूफान आया। बहुत दिनों बाद वे एक किनारे पर लगे। यह बोहीमिया का किनारा था।

अन्टिगोनस उस लड़की को लेकर किनारे पहुँचा। उसको वहाँ कुछ कपड़ों के साथ छोड़, वह वापिस जाने लगा। रास्ते में उसे एक भालू ने चीरकर मार दिया।

एक गड़रिये ने कुछ दूरी पर से यह घटना देखी। भालू के जाते ही उसने अन्टिगोनस को, पास जाकर देखा—उसकी जान चली गई थी। वह वहाँ से बच्ची के

पास गया। उस बच्ची को देखते ही उसकी जान में जान आई। यह साफ़ था कि वह बच्ची किसी बड़े घर की थी। उसके शरीर पर कितने ही कीमती गहने थे। कपड़े थे।

वह रात को उस बच्ची को लेकर घर पहुँचा। उसने अपनी पत्नी से कहा—"भगवान ने, हमें निस्सन्तान जान यह सन्तान दी है। इस बच्ची की वजह से हमारी गरीबी भी दूर हो गई है। बच्ची के एक गहने को भी यदि हमने बेचा, तो जिन्दगी आराम से काट लेंगे।"

सवेरे होते ही गड़रिया और उसकी पत्नी, बच्ची को लेकर, दूर गाँव में चले गये। क्योंकि—"यह लड़की कौन है! इतना पैसा तुम्हारे पास कैसे आया!" दूसरे गाँव वाले उससे न पूछते। वहाँ उन्होंने बताया कि वह लड़की उनकी ही थी। और उसका नाम पर्डिटा रखा। उसके कुछ कपड़े और गहने बेचकर जो पैसे मिले, उससे वे सुख से गुजारा करने लगे।

उधर सिसली में लियोन्टिस ने अपनी पत्नी की सुनवाई शुरु की। लोग जानते

मेरी पत्नी के मित्रों की यह साजिश है ताकि उसको सज़ा न मिले। मेमीलियस के होते मेरे वारिस क्यों नहीं होंगे? मैंने अभी पैदा हुई लड़की ही तो खोई है।" उसने सोचा।

इतने में नौकरों ने आकर कहा—"महाराज! यह जानते ही कि माँ की सुनवाई होने जा रही है, राजकुमार मेमीलियस का हृदय बन्द हो गया और वे मर गये।" अपने लड़के की मृत्यु वार्ता सुनकर हर्मियोन कटे पेड़ की तरह गिर पड़ी। पोलीना उसको दासियों द्वारा उठवाकर अपने घर ले गई और वहाँ उसने उसकी सेवा शुश्रूषा की।

थे कि इससे अधिक अपमानजनक बात और कोई न हो सकती थी।

सुनवाई के शुरु होने के कुछ देर पहिले, न्यायस्थल में भविष्यवाणी हुई। "हर्मियोन निर्दोष है। पोलिक्जिनीस उदार है। केमिलो स्वामि भक्त है। लियोन्टिस सन्देह के भूत के कारण क्रूर हो गया है। जो वह खो बैठा है, अगर वह न पा सका तो उसके कोई वारिस न होंगे।"

यह भविष्यवाणी सुन उपस्थित व्यक्ति हैरान हो गये। परन्तु लियोन्टिस ने परवाह न की। "यह भविष्यवाणी झूट है।

हर्मियोन की सुनवाई तभी खत्म कर दी गई। इकलौते लड़के का मरना और उसकी मृत्यु की खबर सुनकर, हर्मियोन का मूर्छित हो जाना देखकर राजा को पत्नी के सतीत्व पर विश्वास हो गया। भविष्यवाणी ठीक निकली। अन्टिगोनस, जो लड़की ले गया था, वापिस न आया, तो सचमुच उसके कोई वारिस न रहेंगे। यह जिसने भविष्यवाणी की थी, उसी ने हर्मियोन को निर्दोष बताया था।

"जो कुछ गुजरा है, मैं उसके लिए हर्मियोन के पैरों पर पड़कर माफी माँगूँगा। अन्टिगोनस के वापिस आते ही मैं उसे लड़की फिर लाने के लिए वापिस भेजूँगा।" लियोन्टिस ने सोचा। दोनों ही बातें न हुईं। क्योंकि पोलीना ने राजा के पास झूठी खबर भिजवाई कि हर्मियोन मूर्छा में ही मर गई थी। अन्टिगोनस वापिस आया ही नहीं।

कई वर्ष बीत गये। बोहीमिया के पास पडिटा, गड़रिये के घर पली और बड़ी हो गई। वह गड़रियों की लड़कियों की तरह कपड़े पहिनकर, घर के पासवाले चरागाह में अपनी भेड़ बकरियाँ चराया करती। यद्यपि वह पैदा होते ही गड़रिये के घर बड़ी हुई थी, तो भी उसमें कई खानदानी गुण थे। उसका सौन्दर्य देखते ही बनता था। जितनी वह सुन्दर थी, उतनी ही वह विवेकवती भी थी, मित-भाषिणी थी।

एक दिन पोलिक्जिनीस का लड़का फ्लोरिज़िल अपने मित्रों के साथ शिकार खेलने गया हुआ था कि उसने भेड़ों को चराते पडिटा को देखा और वह उस पर मुग्ध हो गया। उसने उससे बातें छेड़ीं। दो-चार बातें करने के बाद, उसे उस पर प्रेम हो गया। उसके बाद फ्लोरिज़िल रोज़ उसके घर जाता। उसने औरों से भी दोस्ती कर ली। परन्तु उसने वहाँ किसी से भी न कहा कि वह राजकुमार था। वह जानता था कि कहने पर न पडिटा, न उसके माता-पिता ही उसके साथ हिल-मिलकर रहेंगे।

परन्तु फ्लोरिज़िल का रहस्य उसके पिता पोलिक्जिनीस को मालूम हो गया। अपने लड़के को दरबार में हाज़िर होता न देख, उसने नौकरों को उसका पीछा करने के

लिए कहा, उन्होंने वापिस आकर कहा कि वह गड़रिये के घर जाता था। और उसकी लड़की बहुत सुन्दर थी।

उसी समय गड़रियों का एक त्योहार आया। उस दिन गड़रिये भेड़ों की ऊन काटकर खुशियाँ मनाते थे। जो कोई आता उसको भोजन खिलाते। उस त्योहार में फ्लोरिजेल भी शामिल हुआ। उससे कुछ दूर, पीछे किसान के कपड़े पहिनकर पोलिक्जिनीस और कैमिलो भी आये। उनकी बड़ी बड़ी पगड़ियाँ, दाढ़ी-मूँछे देखकर फ्लोरिजेल ने उन्हें न पहिचाना।

पोलिक्जिनीस ने गड़रिये के पास आकर पूछा—"वह सुन्दर लड़की कौन है! उससे लगातार बातचीत करनेवाला लड़का कौन है!"

"हुजूर! वह मेरी लड़की पर्डिटा है। वह लड़का उससे शादी करने के लिए कह रहा है। शादी करेगा तो किस्मतवाला ही है। क्योंकि हमारी लड़की वैसी गरीब नहीं है। उसके पास काफ़ी गहने वगैरह हैं।" गड़रिये ने कहा। ये गहने वही थे जो पर्डिटा की माँ ने उसे पहिनाये थे।

पोलिक्जिनीस ने अपने लड़के के पास जाकर कहा—"भाई, तुम उत्सव देखे बगैर इस लड़की से बातचीत किये जा रहे हो, कम से कम इसे चूड़ियाँ तो पहिनाओ।"

यह सुन फ्लोरिज़ेल ने कहा—"यह लड़की चूड़ियों पर निहाल होनेवाली नहीं है। मैं उस सबसे अधिक मूल्य का, अपना हृदय ही दूँगा। हम शादी करने जा रहे हैं।"

पोलिक्जिनीस को बहुत गुस्सा आया। उसने अपनी पगड़ी और नकली दाढ़ी मूँछ निकालकर डाँटा-डपटा—"नीच! तुम इस लड़की से शादी करोगे! या इसे तलाक़ दोगे! अगर कभी तुम इस तरफ़ फिर आये तो तुम्हें, इस लड़की को और इसके माता पिता को कठोर दण्ड मिलेगा। तुम युवराजा हो और तुम एक गड़रिये की लड़की से शादी करोगे!" फिर उसने केमिलो की ओर मुड़कर कहा—"इसे जल्दी ही घर ले आओ!" फिर वह जल्दी जल्दी चला गया।

यह जानते ही कि वह राजा था, और फ्लोरिज़ेल युवराजा था सब की खुशी काफ़ूर हो गई। कोई कुछ न कह सका।

परन्तु पर्डिटा ने फ्लोरिजिल से कहा—
"वे बिना रुके चले गये। होते तो पूछती—"हम गड़रिये हैं। इसलिए हमें नीचा दिखाने की कोई जरूरत नहीं है। वही धूप हमारे घर के छत पर पड़ती है, जो उनके महल की छत पर। प्रमुखता गुण की है, न कि कुल की। अफ़सोस, यह जाने बिना कि तुम युवराज हो, मैंने तुमसे प्रेम किया। हमारा तुम्हारा भला मेल कैसे होगा! तुम जाओ!"

"पर्डिटा! क्या तुमने यह सोचा है कि पिता के गुस्सा करने पर मैं तुमको छोड़ कर चला जाऊँगा! गड़रिये की लड़की ही सही, मैं तुमसे विवाह करके रहूँगा।" फ्लोरिजिल ने कहा।

उसने कह तो दिया, पर यह सम्भव न था। इसलिए समझदार केमिलो ने एक उपाय सोचा। उसने पर्डिटा उसके माँ-बाप और फ्लोरिजिल को साथ लेकर सिसली जाने की ठानी। वहाँ पर्डिटा और फ्लोरिजिल सुख से विवाह कर सकते थे। यही नहीं, वह बहुत दिनों से अपने राजा को देखने की सोच रहा था। वह बहुत पछता रहा था।

केमिल के सुझाव पर, सब सिसली गये। गड़रिया, पर्डिटा के छुटपन के गहने और कपड़े साथ ले गया। उनको देखकर लियोन्टिस जान गया कि पर्डिटा उसकी लड़की थी। वह लड़की जो उसके ख्याल में चली गई थी, बहुत समय बाद मिली। वह मित्र, जिसने उसके हित में पोलिक्जिनीस की हत्या न की थी, उसके पास वापिस आ गया था। अब उसे यही चिन्ता सता रही थी कि हर्मियोन भी यदि जीवित होती तो उसके आनन्द में कोई कमी न रहती।

लियोन्टिस को पत्नी की याद में लगातार आँसू बहाता देख पोलीना ने कहा—"महाराज! जो चले गये हैं, वे वापिस नहीं आते। पिछले दिनों यहाँ एक कलाकार आया था, मैंने उससे हर्मियोन देवी की एक मूर्ति बनवाई। उस पर रंग भी इस प्रकार लगवाया है ताकि वह वास्तविक मालूम हो। अगर आप उसे देखना चाहें तो सपरिवार मेरे घर पधारिये।"

सब मिलकर पोलीना के घर जाकर यथोचित आसन पर बैठ गये। पोलीना ने एक परदा हटाकर, हर्मियोन को उन्हें दिखाया। यह सोचकर वहाँ खड़ी स्त्री मूर्ति ही थी सब ने कलाकार की खूब प्रशंसा की।

"लगता है जैसे हर्मियोन सामने खड़ी हो। मौत के समय उसकी इतनी आयु न थी।" लियोन्टिस ने कहा।

"अगर वे जीवित होतीं तो इस समय कैसी होतीं, यह अनुमान करके ही कलाकार ने यह मूर्ति तैयार की है।" पोलीना ने कहा।

"ऐसा लगता है जैसे वह मूर्ति साँस ले रही हो। पोलीना तेरा भला होगा, मुझे

हर्मियोन को एक बार छूने दो।" लियोन्टिस ने पोलीना को मनाया।

यह देख कि यह बात बहुत देर न चलेगी पोलीना ने कहा—"महाराज, अगर मैं एक मन्त्र जपूँ तो वह मूर्ति यहाँ आकर हमसे बातें करने लगेगी।"

उसके यह कहते ही हर्मियोन नीचे उतर आई। उसने अपने पति और लड़की का आलिंगन किया। सब खुशी से आँसू बहाने लगे।

"आप अन्याय के लिए प्रायश्चित करें, यह सोचकर ही मैंने इनको इतने दिन अपने घर रखा। मुझे क्षमा कीजिये।" पोलीना ने कहा।

"मेरे लिए यह दण्ड ठीक ही है। अभी तक मुझे दण्ड काफी नहीं मिला है। अगर पोलिक्सिनीस आ सके तो कितना अच्छा होगा, मैं उससे भी माफी माँग लूँगा।" लियोन्टिस ने कहा।

अभी वह यह कह ही रहा था कि पोलिक्सिनीस भी वहाँ आ पहुँचा। बात ऐसी हुई कि जब लड़के को लेकर केमिलो वापिस न आया, तो उसने पूछताछ करवाई तो मालूम हुआ कि वे सब देश छोड़कर चले गये थे। यह अनुमान करके कि वे सिसली ही गये होंगे, वह सीधा वहाँ चला आया।

यह जानते ही कि पर्डिटा लियोन्टिस की लड़की थी उसने अपने लड़के को उससे विवाह करने की अनुमति तुरत दे दी। लियोन्टिस पर तो उसका क्रोध तभी चला गया था, इसलिए उसने उसे माफी भी मांगने न दी।

उसके बाद पर्डिटा और फ्लोरिज़ेल का वैभव के साथ विवाह हुआ।

लब्धप्रणाशम्

सियार बोला—"मामा मेरे,
डरते हो क्यों तुम बेकार?
मेरे रहते कौन तुम्हारा
वन में कर सकता अपकार?

युवती गधियाँ तीन वहाँ हैं
पर न एक भी गधा वहाँ,
निश्चय ही वे तुम्हें वरेंगी
भटक रहे क्यों यहाँ वहाँ?"

गधा चला तुरत ही पीछे
सुनते ही गधियों का नाम
कामातुर था, जान न पाया—
हुआ विधाता ही है वाम।

ले आया वह सियार उसको
सिंह जहाँ था क्षुधित-अधीर,
निकट देखते ही गदहे को
झपटा ले वह विकट शरीर।

गदहा चौंका, भागा तत्क्षण
मना जान की अपनी खैर,
सिंह न उसको दबोच पाया
ज़ख़्मी थे उसके दो पैर।

शिकार को यों गया हाथ से
देख क्रुद्ध तब हुआ सियार,
कहा सिंह से—"लानत तुम पर!
पकड़ न पाये एक शिकार!"

लज्जा अपनी छिपा सिंह ने
कहा—"नहीं था मैं तैयार,
मुझे देखते ही वह भागा
कर न सका उसपर मैं वार।"

सियार बोला—"और, अभी फिर
लाता हूँ, उसको मैं पास,
सजग रहें, अब की निश्चय ही
उसे बनायें अपना ग्रास।"

"श्री भारतीभक्त"

गदहे को फिर चला खोजने
उसी समय वह चतुर सियार,
बहुत दूर चलने पर आखिर
मिला राह में वही शिकार।

सियार बोला—"मामा मेरे,
व्यर्थ हो गये तुम भयभीत,
गदही को ही जीव भयंकर
समझ, किया तुमने विपरीत।

लपटी वह थी तुम्हें भेंटने
पर तुम तो भागे डरपोक,
अब वे देगी जान बिचारी
कौन सकेगा उसको रोक!"

यह सुनकर वह मूर्ख गधा फिर
गया सिंह के पास तुरंत,
और सिंह ने बात-बात में
किया वहीं पर उसका अंत।

उसे मार कर गया सिंह जब
करने को सरिता में स्नान,
सियार ने खा लिए लोभवश
तब गदहे के दिल औ कान।

सिंह को जब पता बाद में
इसका चला, हुआ नाराज—
"अरे धूर्त, तूने क्यों जूठा
भोजन कर डाला है आज?"

सियार बोला—"मालिक, मेरी
बातों का करें एतबार,
अगर कान या दिल होता तो
आता क्या यह दो-दो बार?"

कथा सुना यह बंदर बोला—
"मैं न गधा-जैसा हूँ मूर्ख,
गिरा स्वार्थ से तू है खुद ही
सच्ची बात बताकर मूर्ख!"

एक नगर में किसी समय था
रहता कोई एक कुम्हार,
एक बार वह गिरा नशे में
घाव लगे सिर में दो-चार।

घाव ठीक हो गये बाद में
किंतु बने ही रहे निशान,
जिन्हें देखकर लगता मानों
योद्धा वह रण का बलवान।

यही गलतफहमी राजा को
हुई बाद में जब इक बार,
सौंप दिया उसके ऊपर तब
सेनापति के पद का भार।

कुछ दिन बीते सुख से उसके
फिर छिड़ा कहीं जब जंग,
तब राजा ने दी यह आज्ञा—
'करो शत्रु-सैना का भंग।'

यह सुनकर घबड़ाया मन में
वह कुम्हार मूरख डरपोक,
सभी बात बता देने से
वह न सका अपने को रोक।

राजा ने जब जान लिया यह—
वीर न यह, है भीरु कुम्हार।
बोला, "सिंहों के दल में तू
आया क्यों है अरे सियार ?

एक सिंह को मिला कहीं पर
था सियार का बच्चा एक,
जिसको लखकर उसके उर में
बढ़ा बहुत करुणा-उद्रेक।

सिंहनी ने खुशी खुशी ही
उसको अपनाया तत्काल,
अन्य दो पुत्रों के सँग-सँग
किया उसे भी उसने पाल।

सिंहनी का दूध पी-पी
पला स्यार का शिशु नादान,
हिला सिंह के बच्चों में था
हुआ न उसको कुल का ज्ञान।

एक बार तीनों बच्चों ने
देखा वन में, जब गजराज
सिंह के बच्चे दोनों ही
लपके उसपर हो नाराज।

सियार का लेकिन वह बच्चा
भागा कहता घर की ओर—
"यह वैरी है प्रबल हमारा
बढ़ो नहीं अब उसकी ओर!"

देख भागते भाई को यों
गये सिंह के बच्चे लौट
घर आकर सब कहा पिता से—
कैसे भैया आया लौट।

कहा सिंहनी ने तब उससे—
"ज्ञात न तुमको बात सही।

तुम सियार के ही बच्चे हो
पले दया पर मेरी हो तुम तो,
मेरे बच्चे जानें यह सब
भागो इसके पहले ही तुम!"

बन्दर बोला, पुनः मगर से—
"तुझे गया हूँ मैं पहचान,
खाल बाघ की ओढ़ भला क्या
गदहा बचा सका निज जान?

एक नगर में धोबी था इक
गदहा था उसका कमजोर,
उढ़ा उसे वह खाल बाघ की
देता था चरने को छोड़।

बाघ समझकर उस गदहे को
लोग सभी होते भयभीत;
फसल खेत की यों नित गदहा
चर जाता था हो निश्चिंत।

हरी फसल नित खा-खाकर के
हुआ बहुत जब वह बलवान,
लगा रेंकने बीच खेत में
एक रात को वह नादान।

बोली सुन उसकी रखवाले
भेद गये असली झट जान,
मार-मारकर उसी जगह पर
ले ली उसकी सब ने जान!

सियार का बच्चा यह सुनकर
लगा दिखाने अपना क्रोध,
और डाँटने लगा उन्हें यों
मानों वे हों निपट अबोध।

सिंहनी तब हँसी देख यह—
सियार का बच्चा नादान!
जाति बिना जाने अपनी यह
दिखा रहा कितना अभिमान!

अलग उसे ले आकर उसने
कहा—"पुत्र, यह ठीक नहीं,
छोटे भाई ये हैं तेरे
रहो प्रेम से सभी यहीं।"

किंतु सियार का बच्चा अपनी
तज पाया जब अकड़ नहीं,

अहिंसा ज्योति

[२]

सिद्धार्थ पाँच महीने के थे कि कृषि उत्सव आया। उत्सव के समय बूढ़े, बच्चे सभी खेतों में जाते थे। पहिले पहल राजा सोने के हल को पूर्व से पश्चिम की ओर जोतता था। उनके बैलों के सींगों पर सोने की टोपियाँ लगाई जाती थीं। राजा सोने से मढ़ी लकड़ी लेकर बैल हाँका करता।

राजा के बाद कुल के बड़े लोग एक सौ आठ चान्दी के हलों को जोतते, उनके बैलों के सींगों पर चान्दी की टोपियाँ लगाई जातीं। वे चान्दी से जड़ी छड़ी से बैल हाँकते।

उसके बाद, मामूली किसान हज़ार हलों से खेत जोत देते। हल चलाने में वे होड़ करते। जिसकी पँक्ति सीधी होती, और जो अधिक हल चलाता, वह सब से अधिक समर्थ समझा जाता।

इस उत्सव में, कपिलवस्तु की प्रजा, अच्छे अच्छे कपड़े पहिनकर, सोने चान्दी की झंडियाँ, पंखे, कलश, थाल, आदि, लेकर उपस्थित होती। क्योंकि राजकुटुम्ब उत्सव देखने आया था, इसलिए, सौ दासियों के साथ सिद्धार्थ को भी लाया गया। एक पेड़ के नीचे,
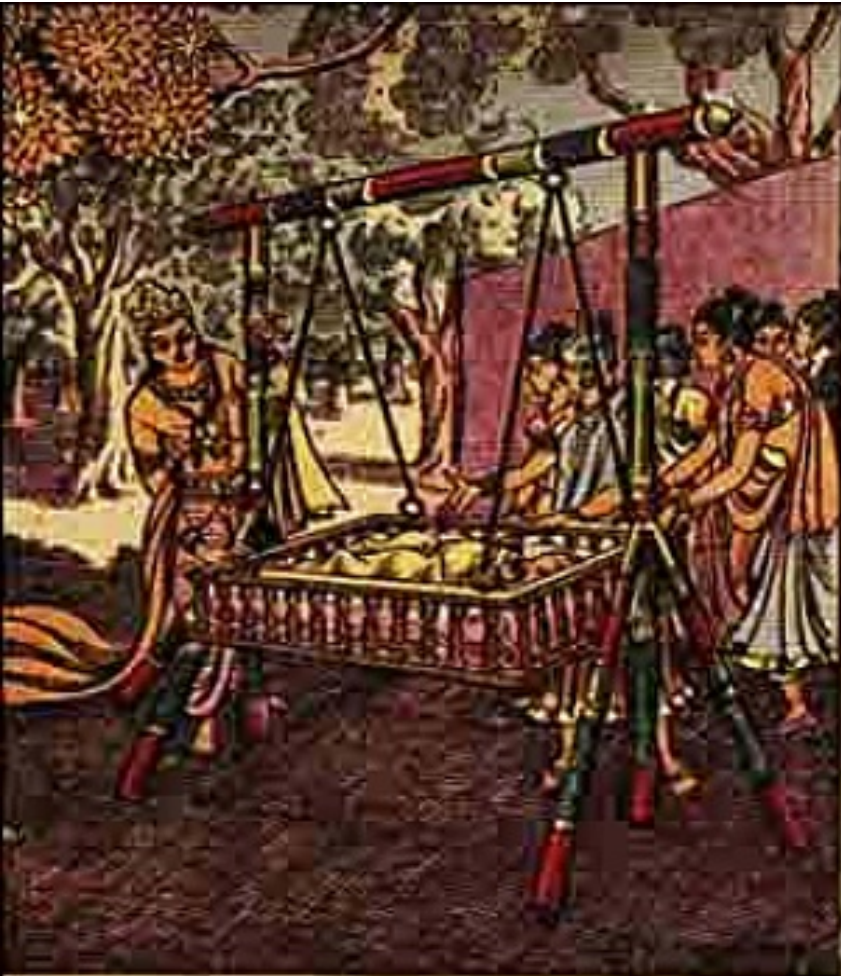
चारों तरफ़ परदे लटकाकर, उसमें बच्चे को रखा गया। फिर दासियाँ उत्सव में इस तरह मग्न हुईं कि उस बच्चे को ही बिल्कुल भूल गईं।

शाम तक उनको बच्चे का ख्याल न आया। जब वे भागी भागी पेड़ के पास गईं तो, उन्होंने एक चमत्कार देखा—वह यह कि जब और पेड़ों की छाया पूर्व की ओर पड़ रही थी तो उस पेड़ की छाया ठीक बच्चे पर पड़ रही थी, धूप से उसकी रक्षा कर रही थी। यह चमत्कार देख, दासियों ने महाराजा शुद्धोधन के पास जाकर कहा—"महाराज! आप यह उत्सव क्या देख रहे हैं, इससे भी हज़ारों गुना आश्चर्यजनक चमत्कार आकर देखिये।" उन्हें वे सिद्धार्थ के पास ले गईं। शुद्धोधन ने यह जानकर कि उसका लड़का अवतार पुरुष था, सिद्धार्थ को नमस्कार किया।

उन्होंने उस बच्चे से कहा—"बेटा, ये सब चमत्कार मुझे क्यों दिखाते हो? अगर आज तुम्हारी माँ जीवित होती तो यह देखकर कितनी आनन्दित होती!"

सिद्धार्थ दिन प्रति दिन चन्द्रमा की तरह बढ़ता जाता था। इतने लाड़-प्यार से पाला-पोसा जानेवाला लड़का, एक दिन सन्यास ग्रहण कर लेगा, यह जब जब शुद्धोधन के मन में आता, तो सहसा वे बहुत दुखी हो जाते।

सिद्धार्थ की उम्र तब बारह वर्ष की थी। राजा शुद्धोधन ने कुछ ज्योतिषियों को बुलाकर पूछा—"क्या आप बता सकते हैं कि मेरा लड़का किन कारणों से वैरागी हो जायेगा?"

"महाराज! वार्धक्य, व्याधि, मृत्यु, सन्यासी,—इन चारों को देखकर आपका

लड़का वैरागी हो जायेगा।" ज्योतिषियों ने कहा।

"मेरा लड़का कुछ भी हो, सम्राट बनेगा। वह किसी भी हालत में सन्यासी न होगा।" शुद्धोधन ने कहा। उन्होंने ऐसी व्यवस्था की कि सिद्धार्थ की नजरों में, बूढ़े, रोगी, शव, सन्यासी आदि आयें ही न।

सिद्धार्थ के लिए तीन महल बनवाये गये। उनके नाम थे, रम्य, सुरम्य, शुभ। एक शरत्कालीन प्रासाद था। दूसरा ग्रीष्म कालीन, और तीसरा वर्षाकालीन था। इन तीनों महलों के चारों ओर लम्बा चौड़ा आहाता था। उनमें कई चौकीदार थे। उनका काम यह था कि वे किसी ऐसे व्यक्ति को अन्दर न आने दें, जिसको, सिद्धार्थ को नहीं देखना चाहिये था। वे बहुत सावधान रहते।

सिद्धार्थ जब सोलह वर्ष का हुआ, तब राजा शुद्धोधन ने उसके विवाह के बारे में सोचा। कपिलवस्तु के राजवंश वाले प्रायः व्याघ्रपुर के राजकुटुम्ब से सम्बन्ध किया करते थे। इसलिए शुद्धोधन ने व्याघ्रपुर के राजा, सुप्रबुद्ध को खबर भिजवाई कि वे अपनी लड़की यशोधरा का सिद्धार्थ से विवाह करवायें।

सुप्रबुद्ध जानता था कि सिद्धार्थ की जन्मपत्री में सन्यास लिखा था। यह सोचकर कि सिद्धार्थ के सन्यास लेने पर, उसकी लड़की अनाथ हो जायेगी, उसने विवाह में यशोधरा को देने से इनकार कर दिया।

परन्तु यशोधरा ने कहा कि वह सिवाय सिद्धार्थ के किसी और से विवाह न करेगी। बुद्ध के सन्यासी हो जाने पर भी उसको आपत्ति न थी।

शुद्धोधन ने सुप्रबुद्ध के तिरस्कार की परवाह न की। वे स्वयं व्याघ्रपुर गये और साथ यशोधरा को कपिलवस्तु ले आये। उसके बाद शास्त्रोक्त रीति से यशोधरा का सिद्धार्थ से विवाह हुआ और सिद्धार्थ को युवराज भी घोषित किया गया। यशोधरा, सिद्धार्थ की मुख्य रानी थी। इसलिए उसने भी राजसिंहासन पर बैठकर मुकुट पहिना।

इस सब के बाद, शुद्धोधन महाराजा ने शाक्यों के पास यह खबर भिजवाई—"मेरे लड़के युवराज सिद्धार्थ की उपपत्नी होने के लिए और मुख्य रानी यशोधरा की सहेलियाँ बनने के लिए, अपनी अविवाहित कन्यायें भेजो।"

पर राजबन्धु इसके लिए न माने। उन्होंने कहा—"युवराज बचा है। बहुत छोटा है। उसने अभी तक क्षत्रियोचित एक भी विद्या नहीं सीखी है। अगर युद्ध हुआ तो वह शत्रुओं का कैसे सामना कर सकेगा! हमारी लड़कियों का भरण-पोषण कैसे कर सकेगा! हम ऐसे के पास अपनी लड़कियाँ नहीं भेजेंगे।"

मेरे बारे में मेरे कुलवालों ने यह कहा है, यह जानकर सिद्धार्थ को बहुत दुख

हुआ—"जो मेरे शक्ति सामर्थ्य को देखना चाहते हैं—ठीक एक सप्ताह बाद राजमहल में आयें।" यह घोषणा सारे शहर में कर दी गई।

निर्णीत दिन के बाद राजमहल में बहुत बड़ा पंडाल तैयार किया गया। उनके एक सौ सात हजार बन्धुओं के अतिरिक्त और कई लोग, दास, दासी, उनका अस्त्र-नैपुण्य देखने के लिए वहाँ उपस्थित थे। सब के सामने सिद्धार्थ ने एक बाण निकाला। उसको कोई साधारण व्यक्ति उठा भी न पाता था। वैसे बाण को अपने बायें पैर की छोटी अंगुली पर रखकर, एक अंगुली के नखुन से, जहाँ बैठे थे, वहाँ से बिना उठे, धनुष पर चढ़ाया। प्रत्यंचा से जो शब्द हुआ, वह विद्युत की ध्वनि से भी भयंकर था। उसकी प्रतिध्वनि से दसों दिशायें गूँज उठीं।

फिर सिद्धार्थ ने एक ही बाण से चार केले के पेड़ों को उखाड़ा। आँखों पर पट्टी बाँधकर निशाना बाँधा। बाल से लटकी हुई वस्तु को बाण से तोड़कर नीचे गिरा दिया। उन्होंने सब के सामने यह निरूपित किया कि अष्ट शिल्पों में उन्हें पांडित्य था।

सिद्धार्थ के सामर्थ्य से सन्तुष्ट होकर शाक्यों ने अपनी चालीस हज़ार कन्याओं को सिद्धार्थ की उपपत्नी के रूप में और यशोधरा की सहेलियों के रूप में भेजना स्वीकार किया।

सिद्धार्थ के पास सब सुख सामग्री थी। साधन थे, उनके चारों ओर स्वर्ग-सा था। विनोद-विलासों में फँसे सिद्धार्थ ने एक दिन अपने सारथी, चेन्ना से कहा—"मैं बाग में जा रहा हूँ। रथ तैयार रखो।"

चेन्ना रथ में चार सफेद घोड़े जोतकर लाया। सिद्धार्थ उसमें चढ़कर बाग की ओर गये। वे राजमहल से कुछ दूर गये थे कि सिद्धार्थ को एक आश्चर्यजनक व्यक्ति दिखाई दिया। वह व्यक्ति झुका हुआ था, और कांपता कांपता चल रहा था। उसके बाल पक चुके थे। मुख में बहुत से दान्त भी न थे।

उसको देखकर सिद्धार्थ ने चेन्ना से पूछा—"यह क्या है, वह आदमी ऐसा क्यों है?"

"वह बूढ़ा है।" चेन्ना ने जवाब दिया।

"वह औरों की तरह न पैदा होकर, बूढ़ा होकर क्यों जन्मा!" सिद्धार्थ ने पूछा। वह यह भी न जानते थे कि बुढ़ापा क्या चीज़ है।

चेन्ना ने हँसकर कहा—"वह बूढ़ा नहीं पैदा हुआ। एक समय था, वह भी जब हमारी तरह जवान था। बुढ़ापा आने पर वह ऐसा हो गया।"

"क्या इस प्रकार के लोग इस दुनिया में बहुत हैं!" सिद्धार्थ ने जानना चाहा।

"क्यों नहीं हैं महाराज! बहुत-से हैं।" चेन्ना ने कहा।

सिद्धार्थ ने कुछ सोचकर कहा—"क्या मैं भी, जब बूढ़ा हो जाऊँगा, इसी तरह कांपता कांपता चलूँगा!"

"जीते जीते हर किसी को बुढ़ापा आता ही है।" चेन्ना ने कहा।

"बाग मत जाओ। रथ को वापिस करो।" सिद्धार्थ ने कहा। क्या इस जीवन का शेष वार्धक्य ही है! किसलिए है! यह व्यर्थ जीवन क्यों!" सिद्धार्थ मन ही मन सोचने लगे।

अपने लड़के को इतनी जल्दी राजमहल में वापिस आया देख, राजा शुद्धोधन ने कारण जानकर बताने के लिए कहा। जब उन्हें मालूम हुआ कि सिद्धार्थ रास्ते में किसी बूढ़े को जाता देखकर चिन्तित होकर चले आये थे तो उन्हें बहुत दुख हुआ। उन्होंने सिद्धार्थ का मनोरंजन करने के लिए नृत्य, गान, आदि की व्यवस्था की। और राजमहल के पहरेदारों की संख्या भी दुगनी कर दी।

चार महीने बीत गये। फिर एक दिन, सिद्धार्थ अपने रथ में बाग के लिए निकले। इस बार रास्ते में एक रोगी दिखाई दिया।

उसको देखते ही सिद्धार्थ काँप उठे।

"वह आदमी वैसा क्यों हैं!" उन्होंने चेन्ना से पूछा। चेन्ना ने बताया कि वह किसी भयंकर रोग से पीड़ित था। प्राणियों के लिए रोगी होजाना स्वाभाविक है। क्या यही जीवन है! इस प्रकार के जीवन की क्यों इच्छा रखी जाय!" यह सोच सिद्धार्थ ने रथ को फिर घर लौटाने के लिए कहा।

जब शुद्धोधन को इस बार यह मालूम हुआ कि उनका लड़का एक रोगी को देखकर वापिस चला आया था, तो उनकी

चिन्ता और भी बढ़ गई। उन्होंने हर तरह से कोशिश की कि इस प्रकार के दृश्य सिद्धार्थ की आँखों में न पड़े।

परन्तु सिद्धार्थ ने फिर चार महीने के बाद एक शव को देखा। उससे पहिले मौत क्या चीज़ होती है, वे न जानते थे। चेन्ना ने उनसे कहा—"हर कोई जो पैदा होता है, इसी तरह मरता है।" इस बार भी सिद्धार्थ ने रथ को घर वापिस लौटाया। ज्योतिषियों की बात ठीक निकल रही थी। शुद्धोधन उसे रोक न पा रहे थे।

फिर चार महीने बीते। आषाढ़ पूर्णिमा का दिन आया। यशोधरा पूर्ण गर्भिणी थी। कभी भी प्रसव हो सकता था। सिद्धार्थ ने पहिले की तरह चेन्ना को रथ लाने के लिए कहा, और उस पर सवार होकर वे बाग की ओर गये। रास्ते में उनको एक सन्यासी दिखाई दिया। उस सन्यासी ने सिर घुटवा रखा था। गेरुआ पहिने हुए था। सिर नीचे किये सामने के दो चार गज स्थल को देखता हुआ चला जा रहा था। उसका मुँह देखते ही सिद्धार्थ को लगा कि उसके मन में कोई राग-द्वेष व विकार न था।

"चेन्ना, यह कौन है? यह औरों की तरह नहीं है न?" उन्होंने अपने सारथी से पूछा।

"यह सन्यासी है। यह इहलौकिक सुखों को छोड़कर—जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त होने की इच्छा रखनेवाला है।" चेन्ना ने कहा।

सिद्धार्थ का मन यकायक हल्का-सा हो गया। उसने चेन्ना से कहा।

"रथ को बाग की ओर ले जाओ।"

(अभी और है)

प्रकृति के आश्चर्य

[८]

"मैं एक विचित्र बात दिखाऊँगा।"

यह कहता कुयेबाबा मुझे जंगल में ले गया। हमें वहाँ एक रास्ता दिखाई दिया। जंगल के जानवर उस रास्ते पानी पीने के लिए जाया करते थे। उस रास्ते पर किन किन जानवरों के पद चिन्ह थे, उसने मुझे विस्तार से बताया।

नदी के किनारे के एक ऊँचे पेड़ पर हम इस तरह बैठ गये, जैसे कोई नाटक देखने के लिए बैठे हों। इतने में हमें बच्चों के रोने की सी ध्वनि सुनाई पड़ी। "यह क्या है!" मैंने पूछा "बन्दर" उसने मुझे चुप रहने के लिए कहा। हमारे पास की एक टहनी खूब हिली। मैंने उस पर से एक बन्दर परिवार को उतरते देखा। उसमें एक बड़ा नर बन्दर था, और एक बड़ा मादा बन्दर। मादा बन्दर के पेट पर एक छोटा-सा बच्चा चिपका हुआ था। बन्दरों ने नदी के पास जाकर पानी पिया, स्नान किया।

फिर हमने उसी रास्ते एक विचित्र जन्तु को आते देखा। वह एक बड़े कुत्ते के बराबर था। जब वह चलता तो उसकी पूँछ पंखे की तरह इधर उधर हिलती। वह चींटियों को खानेवाला पशु था। उसका मुख पतला था, नोकीला-सा। बीस अंगुल लम्बा होगा। उसकी जीभ पतली और लम्बी थी। वह जीभ को बाहर निकालकर, रास्ते की चींटियों को उससे जमा करके, मुख में रख लेता। उसके पैरों के नाखून इस तरह मुड़े हुए थे, कि उसको चलने में दिक्कत होती थी।

तिबोर सेकल्य

"जागवार को देखकर ये जन्तु डरते क्यों नहीं!" मैंने कुयेबाबा की ओर इस प्रकार देखा, जैसे यह पूछ रहा हूँ। "पानी पीते समय, सवेरे और शाम को जन्तुओं में शान्ति रहती है।" उसने धीमे से बताया।

मुझे पता लग गया, पानी पीने के घाटों पर जंगल के जन्तुओं में शत्रुता नहीं होती। जो जंगली जीवन से अपरिचित हैं, उनको यह बड़ी विचित्र बात लगेगी। जागवार पानी पीकर अंगड़ाई ले अपना शरीर चाटकर जंगल में चला गया।

कुयेबाबा ने मेरा हाथ दबाया। मैंने नीचे जो देखा तो मुझे एक जागवार शेर दिखाई दिया। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। क्योंकि वह जंगल का राजा था मैंने सोचा था कि उसको देखकर जानवर भय के कारण भाग जायेंगे। पर वैसा कुछ न हुआ। जागवार जब पानी पी रहा था, तो बन्दर पहिले की तरह पानी में खेल रहे थे। पानी पाते हुये, चींटी खानेवाले पशुने भी अपना मुख पानी से बाहर न किया। जागवार ने मुख किनारे पर लगाकर, बिल्ली की तरह नदी में पानी पिया।

इसके कुछ देर बाद टापीर नामक जन्तु आया। वह होता तो सूअर की तरह है, पर उससे बहुत बड़ा होता है। इसकी खाल मोटी होती है। अमेज़न नदीवाले प्रान्त में मोटी खालवाला यही एक जन्तु है। उसकी नाक नीचे लटकती रहती है। उसके पीछे एक छोटा टापीर आया, दोनों ने मिलकर नदी में स्नान किया। जब वे वापिस जा रहे थे, तो कुयेबाबा ने एक मजबूत बाण लेकर बड़े टापीर के गले का निशाना बाँधकर छोड़ा। वह वहीं गिर गया। अगर वह

बाण गले पर न लगकर और कहीं लगता, तो बाण के साथ वह जंगल में भाग जाता।

पेड़ से उतरकर, हमने टापीर को ले जाना चाहा पर चूँकि वह पाँच सौ पाउन्ड से अधिक भारी था हम उसे उठा न सके। हम अपने दस आदमी बुला लाये। चार ने मशालें पकड़ रखी थीं। बाकी ने टापीर को पकड़कर घसीटा। एक दिन के लिए पूरा भोजन मिल गया था।

मांस काटकर हमने एक पेड़ पर लटका दिया। जब लड़के से पूछा कि उसे तभी बनाया जाय या कल तक रखा जाय, तो उसने कहा—"कच्चा मांस जानवरों को पसन्द है और पका मांस मनुष्यों को, यह मलोवा बाबा कहा करता है।" उसकी बात तब तो हम न समझ सके पर उस दिन, रात को कच्चे मांस की सुगन्धी पा, करीब दर्जन जागवार वहाँ आये, तब हम उसका अर्थ समझ सके। उनको दूर रखने के लिए हमें चारों दिशाओं में रात भर आग जलाये रखनी पड़ी।

जब सवेरे हम आग सेक रहे थे तो कुयेबाबा ने कहा—" न्यूकुचाप हम दोनों का मिलकर घूमने का यह आखिरी दिन है। शाम को तुम चले जाओगे।" वह ऊपर से मुस्करा तो दिया था, पर मैं जानता था कि वह मन ही मन दुखी हो रहा था।
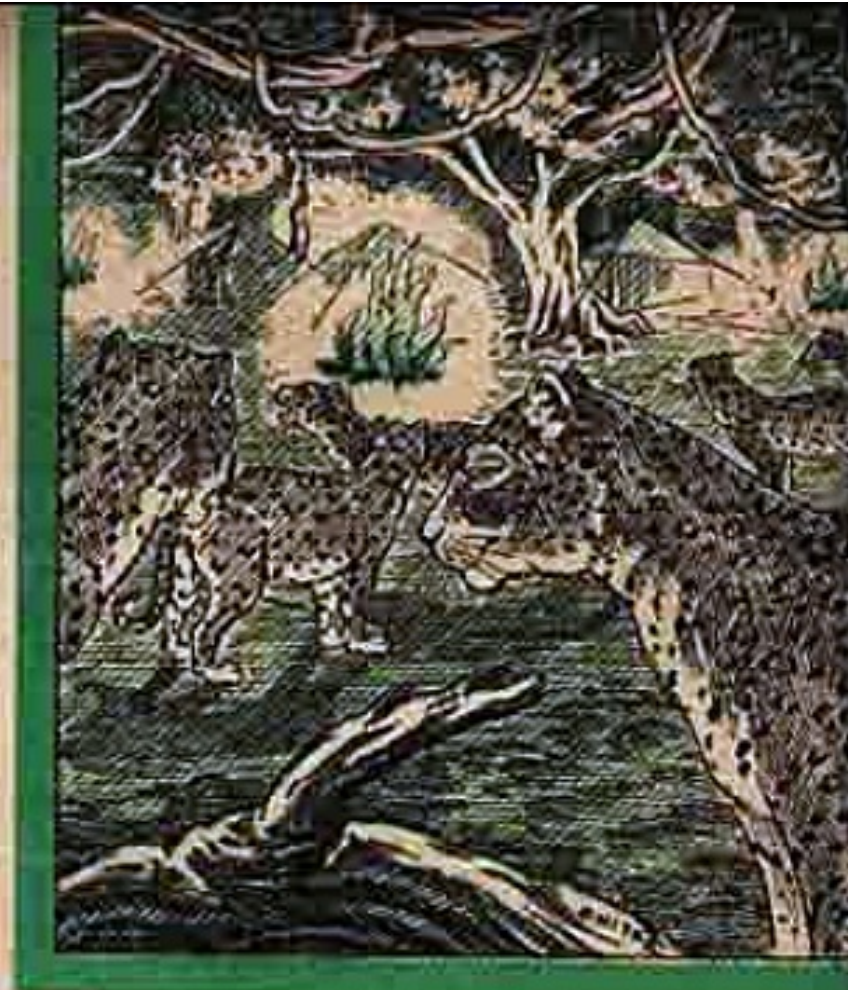
हमने तभी मांस बनाया। "हमें इस लड़के के लिए कुछ चन्दा इकठा करना चाहिये।" एक ने कहा।

सब ने चन्दा इकठ्ठा करना शुरु किया, पर जब वह वसूल किया जा रहा था तो उस लड़के ने कहा—"कुछ फलों को भी तो साथ ले जाना अच्छा है।"

हम रास्ते पर अनानास लाने के लिए जंगल में चल पड़े।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि यहाँ अनानास है?" मैंने पूछा।

"कल हमने जो टापीर मारा था, उसकी नाक में अनानास के काँटे थे। क्योंकि उसका चमड़ा मोटा है, अगर काँटे चुभें तो भी उसे नहीं मालूम होता। हमारे मारने से दो घंटे पहिले ही उसने अनानास खाया होगा। उसके पेट में अनानास के पत्ते भी थे।"

कहते कहते उसने झट मेरा हाथ पकड़ लिया। वह जिस ओर देख रहा था उस तरफ़ मुझे दो सुन्दर हरिण दिखाई दिये। उन्हें हमारा आना पता न था। वे निश्चिन्त हो चर रहे थे।

मैंने जब पूछा कि "क्या हरिण का मांस स्वादिष्ट होता है।" उसने बताया कि बड़ा स्वादिष्ट होता है।

यह कहते ही उसने एक विचित्र आवाज़ की। वह आवाज़ सुनते ही दोनों हरिण सिर उठाकर हमारी तरफ़ देखने लगे। कुयेबाबा अपना धनुष-बाण छोड़कर उनकी ओर गया। वे न हिले, न डरे ही। उसने एक हरिण के गले पर हाथ रखकर सहलाया। उसके मुख पर मुख रखकर खुश होते हुये उसने मुझे बुलाया। मैं भी दूसरे हरिण के पास गया पर यकायक वह डरा और भाग गया, उसके साथ दूसरा हरिण भी चला गया।

"मुझे जन्तुओं को सहलाना बड़ा पसन्द है। अगर हाथ में बाण न हों तो वे भी बड़ा स्नेह दर्शाते हैं। तुम्हारे मित्रों के पास अब काफ़ी कुछ खाने को है। शिकार खेलने की कोई ज़रूरत नहीं है। जन्तु भी भूख लगने पर ही दूसरे जन्तुओं को मारते हैं। मनुष्य को जन्तुओं से कम नहीं होना चाहिये।" उसने कहा।

(अगले अंक में समाप्त)

चटपटी बातें

एक छोटा लड़का पाठशाला से वापिस आया। उसका मुँह उदास देखकर उसकी माँ ने पूछा—"पाठशाला कैसी थी?"

"मैं उस पाठशाला में नहीं जाऊँगा। मैं पढ़ना लिखना तो जानता नहीं—बातें करना जानता हूँ, और वे बातें करने नहीं देते। मैं क्यों जाऊँ वहाँ?" लड़के ने कहा।

*   *   *

"सुनते हैं फसल बरसात में होती है"—एक छोटी लड़की ने अध्यापिका से कहा।

"तुम्हें यह किसने बताया?" अध्यापिका ने पूछा।

"मेरे पिताजी ने।"

"तुम्हारे पिता? क्या काम करते हैं।"

"—छातों की मरम्मत करते हैं।"

*   *   *

हजामत बनवानेवाले ने नाई से पूछा—"क्यों भाई तुम्हारे पास कोई और उस्तरा है?"

नाई—"है—साहब, किसलिए?"

हजामत करवानेवाला—"आत्मरक्षा के लिए।"

*   *   *

"जीजा, मुझे व्याकरण आ गया है।"

"आ गया? तो बताओ मीठे का बहुवचन क्या है?"

"मिश्री।"

*   *   *

हमारे पास इस समय कोई नौकरियाँ नहीं हैं—जो पहिले हैं, उन्हीं के पास काम नहीं है।"

"तो मुझे जरूर रखिये, मुझे कोई काम आता जाता नहीं है।"

एक दुबला पतला आदमी, एक और मोटे ताजे आदमी से वाद-विवाद कर रहा था।

मोटे आदमी ने दुबले आदमी से कहा—"तुम्हें देख कर तो लगता है, जैसे अकाल पड़ा हुआ हो।"

दुबले आदमी ने कुछ सोचकर कहा—"और तुम्हें देखकर ऐसा लगता है, जैसे तुम उस अकाल के कारण हो।

*   *   *

प्रभात—योगेन्द्र के घर एक दिन खेल रहा था। जब वह अपने घर जाने लगा, तो मूसलाधार बारिश होने लगी! योगेन्द्र की माँ ने उसे, योगेन्द्र की बरसाती दी।

"आप तकलीफ न कीजिये।" प्रभात ने कहा।

"—नहीं कोई बात नहीं तुम्हारी माँ भी तो योगेन्द्र के लिए इतना करेगी।" योगेन्द्र की माँ ने कहा।

"नहीं, मेरी माँ उसे जाने ही नहीं देगी। वे उसे भोजन के लिए भी रोक लेंगी।

*   *   *

सुरेश की माँ उसे साफ रखने की हमेशा कोशिश करती, पर वह गन्दा ही रहता। माँ के बहुत कहने पर भी, सोते समय, वह प्रायः अपने कपड़े तह बाँधकर न रखता।

एक दिन उसकी माँ, उसके कमरे आई और देखा कि इधर उधर कपड़े बिखरे पड़े हैं।

उसने पूछा—"कौन है, जो बिना कपड़े ठीक तरह से रखे सो गया है!"

सुरेश ने लिहाफ मुँह पर डालते हुए कहा—"आदम!"

*   *   *

"जरूरत हुई तो क्या तुम हमारी पत्रिका अकेले चला सकोगे!"

"यह तो मेरे बस की बात नहीं है।"

"तुम तो अनुभववाले मालूम होते हो—तुम्हें नौकरी देकर देखता हूँ।"

घास क्यों बढ़ी ?

विक्रमादित्य मन्त्रियों के साथ जंगल में घूमने गये। वहाँ घास इतनी बढ़ी हुई थी कि वे चल न पाते थे। उन्होंने घास से पूछा—"तुम इतनी क्यों बढ़ गई हो?"

"महाराज! क्या करूँ? मुझे गौ चरने नहीं आती।"

राजा ने फिर गौवों से पूछा—"तुम जंगल में घास क्यों नहीं चरती।"

गौवों ने कहा—"हमें ग्वाला वहाँ ले ही नहीं आता।"

राजा ने ग्वाला से पूछा—"तुम गौओं को क्यों नहीं जंगल ले जाते हो?"

ग्वाले ने कहा—"महाराज! मैं कैसे ले जाऊँ—मालिक खाने को कम देता है, इसलिए मुझ में इतनी ताकत नहीं कि उनको ले जाऊँ।"

महाराजा ने मालिक से पूछा—"तुम ग्वाले को खाना क्यों नहीं देते?" मालिक ने कहा—"मैं कैसे दूँ, पकाने के लिए कुम्हार बर्तन बनाकर नहीं देता है।" महाराजा ने कुम्हार से पूछा—"तुम बर्तन क्यों नहीं देते?" उसने कहा—"चूहे उन्हें फोड़ देते हैं।" महाराजा ने चूहों से पूछा—"तुम क्यों बर्तन तोड़ते हो? चूहों ने कहा—"हमें बिल्ली नहीं खाती, इसलिए हमारी संख्या बढ़ रही है, तब हम ऊधम न मचायें तो क्या करें?" महाराजा ने बिल्लियों से पूछा—"तुम चूहे क्यों नहीं खाते?" बिल्ली ने कहा—"हम कैसे खायें। चूहे गन्दे हैं। नहाते नहीं।"

उसके बाद राजा ने आज्ञा दी कि चूहों को रोज नहलाया जाय, फिर क्या था, बिल्ली उन्हें खाने लगी। सिलसिला ठीक हो गया और जंगल में घास बढ़नी भी बन्द हो गई।

होली आयी

कवि : महेशनारायण सिंह

होली आयी! होली आयी!!
दीवानों की टोली आयी!
मुन्नू के सब साथी आये,
मुन्नी की हमजोली आयी!
होली आयी! होली आयी!!

मुन्नू के पाकिट में लड्डू,
मुन्नी है खा रही जलेबी;
बाबूजी के लिए बड़ी-सी
आज 'भंग' की गोली आयी!
होली आयी! होली आयी!!

श्वेत दुपट्टा मुन्नी का है,
मुन्नू का कुर्ता मलमल का;
रंग-भरी पिचकारी कर में,
कुंकुम की भी झोली आयी!
होली आयी! होली आयी!!

लाल हरा पीला केसरिया
नील गुलाबी रंग सुहाने,
डाल परस्पर सब हैं कहते—
'बुरा न मानो, होली आयी!'
होली आयी! होली आयी!!

आपस में सब मिलें खुशी से,
झगड़े कोई नहीं किसी से;
नाचें, गायें, खुशी मनायें—
इसी लिए है होली आयी
होली आयी........! होली आयी........!!

बहरा

अच्छा भला राजाराम शादी के बाद बहरा होगया। कोई कान में चिल्लाये तो भी न सुन पाता। अजीब दिक्कत थी उसकी, कहीं घूम फिर भी न पाता ताकि लोग उसकी हँसी मजाक न करें।

एक दिन ससुराल से खबर आई कि ससुर सख्त बीमार हैं। राजाराम न चाहता था कि उसके ससुर जाने कि वह सुन न पाता था।

उसने सिलसिलेवार उस बातचीत की कल्पना की, जो वह ससुर से करता। उसने उसे लिखकर रट भी डाला। वह यों थी—

ससुर जी से जाते ही पूछूँगा—कि "तबियत कैसी है? वे अवश्य उत्तर देंगे। "पहिले तो खराब थी, अब ठीक है।" तब पूछूँगा—"दवा क्या ले रहे हैं?" वे जरूर दवा का नाम बतायेंगे। मैं कहूँगा कि यही दवा "राम बाण" है। आखिर पूछूँगा कि इलाज कौन कर रहा है, वे चिकित्सक का नाम बतायेंगे। मैं कहूँगा उनसे अच्छा चिकित्सक मिलना मुश्किल, आपने अपने को अच्छे चिकित्सक के हाथ सौंपा है।"

वह ससुराल गया। सास, सालों से बचता वह सीधा ससुर के पास गया। उनकी खाट के पास बैठ गया। उसने ससुर से पूछा—"तबियत कैसी है?"

"इस बार न बचूँगा।" उन्होंने कहा—पर राजाराम ने सोचा कि वह उसका कल्पित उत्तर ही दे रहे थे—"खुशी है।"

ससुर बिगड़े। राजाराम ने फिर दवा के बारे में पूछा। ससुर तो बिगड़े हुए थे ही उन्होंने कहा—"कँकड़ पत्थर" राजाराम ने कहा—"यही आपके लिए राम बाण औषधी है।" ससुर तिलमिलाये। इतने में राजाराम ने पूछा—"इलाज कौन कर रहा है?" ससुर ने चिढ़कर कहा—"यमराज।"

राजाराम ने कहा—"आपने अच्छे चिकित्सक के हाथ आपने को सौंपा।"

ससुर आपे से बाहर हो गये और दामाद को बाहर निकलवा दिया हाय, बहरा बिचारा।

✻ रंगों का त्यौहार ✻

मीतीशरंजन गुप्त

हँसी-खुशी का लिए खजाना,
होली आई—बोल रे !
राग-फाग मस्ती का गाना,
बजे ढमाढम ढोल रे !!

बन्दर की सेना छिपी हुई,
चलना सम्भल सड़क पर !
कहीं न तुम पर हमला कर दे,
पिचकारी-रंग ले कर !!

लाल चेहरा रंगा सुहाना,
दिखे खूब भकलोल रे !
हँसी-खुशी का लिए खजाना,
होली आई—बोल रे !!

बाजार गरम पकवानों का
औ' धकाधक भंग छने !
सब लोग दिख रहे रंग सने,
ह-ह-ह-हा हुड़दंग मने !!

आज भूल कर वैर पुराना,
प्रेम परस्पर घोल रे !
हंसी-खुशी का लिए खजाना,
होली आई—बोल रे !

भोला, अखिला, देवन आओ,
जल्दी हरी-अनिल सुनो !
भर-भर पेट मिठाई खाओ,
सिर कहीं पीछे न धुनो !!

भाई, सबको गले लगाना,
आज अरे, दिल खोल रे !
हँसी-खुशी का लिए खजाना,
होली आई—बोल रे !!

परास्त

मोहम्मद तुगलक कभी दिल्ली की गद्दी पर था। उसके बारे में बहुत-सी कहानियाँ मशहूर हैं। कहा जाता है वह दिमाग फिरा था। कई तो उसको पागल भी बताते थे। वह ही दिल्ली से राजधानी हटाकर दौलताबाद ले गया था। फिर वापिस दिल्ली। कितने ही लोग मारे गये, कितने ही परिवार खतम हो गये और कोई फायदा नहीं हुआ।

हाँ तो उसके बारे में यह भी एक कहानी है। जो कई का कहना है सच है।

उसने अपने गुलामों को हुक्म दे रखा था कि उसके कमरे में बिना इजाजत को कोई न आये।

एक दिन नहा धोकर—अपने कमरे में बादशाह कपड़े पहिन रहा था। सब दरवाजे बन्द थे। परन्तु किसी किवाड़ में से सूर्य की किरणें आ रही थीं। तुगलक बिगड़ा, चिल्लाया, "कौन है, वहाँ!"—एक गुलाम आया। "देखो यह कौन हमारी इजाजत के बगैर अन्दर आया है!" तुगलक बोला।

गुलाम ने इधर उधर खोजा। कहीं कोई न था। इतने में पांच दस गुलाम और वज़ीर भी जमा हो गये। उन्होंने भी खोजा, पर कहीं कोई नहीं। सबको ताज्जुब।

वज़ीर ने कहा—"हुजूर, यह सूरज के किरण हैं।"

तुगलक चिल्लाया—"तो हम इसको मिटाकर रहेंगे। इसकी इतनी हिम्मत। सेना तैयार करो।" तुरत एक बड़ी सेना तैयार की गई।

तुगलक सूरज पर धावा बोलने निकला। दुपहर ढल गई। शाम तक सेना के कूच करने से इतनी धूल उड़ी कि सूरज ढक सा गया।

वज़ीर ने कहा—"सूरज हार गया है, हुजूर के सामने माफ़ी चाह रहा है।"

"तुगलक ने सूरज को ढका देख कहा—"हाँ, अब यह दुश्मन खतम हो गया है।" और सेना के साथ वह महल वापिस चला आया।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

मई १९५९ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ७, मार्च '५९ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

मार्च - प्रतियोगिता - फल

मार्च के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : भीड़ यहाँ
दूसरा फ़ोटो : नाचें कहाँ ?
प्रेषक : रामचन्द्र सिन्धी
कक्षा ११ बी, के. डी. जैन हाई स्कूल, मदन गंज, किशनगढ़ (राजस्थान)

समाचार वगैरह

अब वैज्ञानिकों का कहना है कि भूमि नाक की तरह है, यानि उतनी गोल नहीं जितनी कि नारंगी होती है।

एक ज़माना था जब भूमि को चपटा बताया गया था, फिर इसे नारंगी के आकार का बताया गया।

वैज्ञानिकों ने यह बात दस महीने पहिले छोड़े गये सेटिलाइट द्वारा मालूम की है। यह अमेरिका ने छोड़ा था।

* * *

हरप्पा के अवशेषों ने भारत के प्राचीन इतिहास पर नया प्रकाश डाला था। मगर ये सब अवशेष आज के पाकिस्तान में हैं।

अब समाचारों से ज्ञात होता है कि अहमदाबाद से ७० मील दूर कुछ ऐसे अवशेष मिले, जो हरप्पा संस्कृति के हैं।

हरप्पा संस्कृति, आर्यों की संस्कृति, से भी कई शताब्दि अधिक प्राचीन है।

* * *

वाशिन्गटन की खबर है कि आगामी दस वर्षों में मनुष्य आकाश में ऐसे स्टेशन बना सकेगा, जहाँ से अन्तर्ग्रहीय यात्रा हो सकेगी।

यह भी अनुमान किया जा रहा है कि १९६९ तक इस भूमि का आदमी सकुशल चन्द्रमा तक पहुँच सकेगा।

* * *

विशेषज्ञों का कहना है कि एक दिन आदमी आसानी से १०० वर्ष जी सकेगा।

अन्वेषकों ने मालूम किया है कि मनुष्य के जीवाणु सौ वर्ष तक स्वस्थ रह सकते हैं, यदि वे रोगों द्वारा दुर्बल न कर दिये जायें और अब कई रोगों का इलाज मालूम हो गया है और अन्यों का भी मालूम हो रहा है।

यह भी इन लोगों का कहना है कि हर वयस्क बीस सालों में आधा इन्च घटता है।

*　　*　　*

भारत में काम करनेवाले मिशनरियों को पिछले ढाई वर्षों में, २४ करोड़ रुपये बाहर से मिले हैं। यह समय पिछले जून तक का है।

इनमें से, अमेरिका ने १,८४० लाख रुपये भेजे, स्टर्लिंग देशों ने ३३० लाख रुपये और बाकी देशों ने २०० लाख रुपये।

इस समय हमारे देश में ४,८४४ मिशनरी काम कर रहे हैं।

*　　*　　*

आजकल कोन्ग्रेस की अध्यक्षा श्रीमती इन्दिरा गान्धी हैं। ये नेहरु परिवार की तीसरी सदस्या हैं जो कोन्ग्रेस की अध्यक्ष चुनी गई हैं और तीसरी स्त्री हैं, जो इस उच्च पद को अलंकृत कर रही हैं। इनसे पहिले श्रीमती सरोजनी नायडु, व श्रीमती सेनगुप्ता कोन्ग्रेस की अध्यक्षा रह चुकी हैं।

श्रीमती गान्धी बच्चों और स्त्री कल्याण के क्षेत्र में भी काम करती आई हैं।

*　　*　　*

कोन्ग्रेस के पिछले अधिवेषन में भूमि सुधार के लिए प्रस्ताव पास किया गया।

इस प्रस्ताव के अनुसार भूमि का स्वामित्व सीमित कर दिया जायेगा। योजना आयोग ने इस सिलसिले में कुछ सुझाव भी तैयार किये हैं।

बम्बई, आन्ध्र, और यू. पी में शीघ्र ही यह प्रस्ताव कार्यान्वित किया जायेगा।

*　　*　　*

द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अनुसार भारत में इस्पात की उत्पत्ति की असाधारण वृद्धि की जा रही है।

अब रूरकेला में लोहे का एक कारखाना काम करने लगा है। यह शीघ्र इस्पात भी पैदा करेगा।

अब तक भारत में जमशेदपुर में ही इस्पात बनाया जाता था। वहाँ के कारखाने का भी विकास होरहा है।

चित्र - कथा

एक दिन दास और वास जब बाग जा रहे थे तो तूफ़ान आया। दोनों ने अपना छाता खोला। बगल में "टायगर" भी चलने लगा। थोड़ी दूर इस तरह जाने के बाद, एक मेंढे ने उनसे टक्कर लगाने की सोची। इस बीच हवा के झोंके से छाता उलट गया और उनके हाथ से खिसककर मेंढे के सिर पर जा गिरा। जब मेंढा अन्धा-सा हो इधर उधर भागने लगा तो दास वास और "टायगर" वहाँ से भाग गये।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3 Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

सूचना

एजेण्टों और ग्राहकों से निवेदन है कि मनीआर्डर कूपनों पर पैसे भेजने का उद्देश्य तथा आवश्यक अंकों की संख्या और भाषा संबंधी आदेश अवश्य दें। पता—डाकख़ाना, जिला, आदि साफ़ साफ़ लिखें। ऐसा करने से आप की प्रतियाँ मार्ग में खोने से बचेंगी।

—सर्क्युलेशन मैनेजर

★

ग्राहकों को एक जरूरी सूचना !

ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिये। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न होगा, उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकेगा। पता बदल जाने पर तुरन्त नए पते की सूचना देनी चाहिए। यदि प्रति न मिले तो १० वीं तारीख से पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद में आनेवाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक, "चन्दामामा"

हरसमय फायदेमंद !
गरम चाय के प्याले में
कुछ बूँदें नीबू का रस डालिए
(दूध नहीं) और स्वाद के मुताबिक
चीनी मिलाकर चम्मच से
चलाइए और चाय की अच्छाई और
नीबू के फायदों का आनन्द लीजिए

मैं चाय हूँ— आपकी बन्धु

हर्क्युलिस एक साइकल से भी बढ़कर....

एक जीवनसाथी है !

हर्क्युलिस साइकल घर भर के काम आती है भले ही सब लोग उसे चला न सकें। मान लीजिए किसी की तबीयत खराब है और दवाई लानी है या बाज़ार से सब्ज़ी वगैरह मँगानी है। ऐसी दशा में अगर हर्क्युलिस हो तो घर के लड़के लोग आपकी चीज़ें बाज़ार से लाने के लिए हमेशा राज़ी रहते हैं। हर्क्युलिस होती भी इतनी मज़बूत है कि बरसों काम देती है।

टी. आय. साइकल्स के आधुनिकतम कारखाने में पूर्ण विशेषज्ञता से बनायी जानेवाली प्रत्येक हर्क्युलिस साइकल के पीछे उन लोगों का अनुभव है जो करीब ५० वर्षों से अव्वल दर्जे की साइकलें बनाते रहे हैं। इस साइकल की सुन्दरता बस देखते ही बनती है और यह चलती भी इतनी हल्की है कि कुछ पूछिए नहीं। आप देखेंगे कि हर्क्युलिस हर दृष्टि से एक अच्छी साइकल है।

आपकी सायकल आपकी एक पूँजी है—

Photo by B. Bhansali

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

नाचे कहाँ ?

प्रेषक :
रामचन्द्र सिन्धी, किशन

बुद्ध चरित्र